परिवार निर्माण की उपयोगिता समझी जाए

—श्रीराम शर्मा आचार्य

परिवार निर्माण की उपयोगिता समझी जाए

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनर्मुद्रित सन् २०१४ मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है और व्यक्तियों को उच्चस्तर का बनाने का उत्तरदायित्व परिवार पर रहता है। जो व्यक्ति जीवन के आरंभ में ही किसी कारणवश परिवार से बिछुड़ जाता है, वह प्राय: अविकसित रहकर जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। विद्वानों ने परिवार को व्यक्तियों के ढालने वाली प्रयोगशाला बतलाया है। वास्तव में प्रयोगशाला की सामग्री और यंत्र जितने उपयुक्त और सही तरीके से काम करने वाले होंगे उतनी ही उसकी उपज निर्दोष और अपने उद्देश्य को पूरा करने वाली सिद्ध होगी। इसलिए यदि समाज को समुन्नत और शक्तिशाली बनाना हो तो परिवारों को सुधारना और उन्हें सुसंगठित रूप देना भी आवश्यक है। तभी वे ऐसे व्यक्तियों को उत्पन्न कर सकेंगे जो समाजोत्थान के लिए सब प्रकार से हितकारी सिद्ध हों।

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण कुछ ध्यान देने योग्य तथ्य

परिवार निर्माण अपने युग का सबसे बड़ा काम है। उसके बिना नए समाज के निर्माण की आशा पूरी हो सकना जरा भी संभव नहीं है। सुविधा साधन बढ़ जाने से जीवनयापन में सरलता तो हो सकती है पर उतने मात्र से जीवन नहीं बनता। जीवन का अर्थ उतने तक ही सीमित नहीं है। उसकी गंभीरता और गरिमा तो स्तर पर ही निर्भर है। उच्चस्तर ही वह आधार है, जिसके सहारे अभावग्रस्त परिस्थितियों में भी स्वर्गीय संभावनाओं को मूर्तिमान बनाया जा सकता है। इस कमी के रहते यदि सुविधा साधन बढ़ने लगें तो उनके दुरुपयोग से संकट भी बढ़ेंगे। यहाँ साधन उपार्जन को महत्त्वहीन नहीं बताया जा रहा वरन कहा यह जा रहा है कि उत्कृष्ट व्यक्तित्व की गरिमा सर्वोपरि है। उसकी उपेक्षा की गई तो प्रगति का रथ दलदल में फँसे का फँसा ही रह जाएगा। अस्तु, नवयुग के उज्ज्वल भविष्य की आशा करते हुए हमें यह सोचना होगा कि समुन्नत एवं सुसंस्कृत समाज के घटक बन सकने योग्य सुयोग्य एवं आदर्शवादी नागरिकों की फसल कैसे उगाई जाए?

देश में, विश्व में नर रत्नों का उत्पादन बढ़े, यही समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और उसकी पूर्ति सुसंस्कृत परिवार के अतिरिक्त और कोई कर ही नहीं सकता। बौद्धिक ज्ञान की अभिवृद्धि स्कूलों में ही हो सकती है। शिल्प उद्योग की शिक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्योगशाला में—विज्ञान की प्रयोगशाला में और कला-कौशल की शिक्षा सदुद्देशीय संस्थानों में मिल सकती है। पर व्यक्तित्व को उत्कृष्टता के ढाँचे में ढालने का कार्य परिवार की प्रयोगशाला के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता।

हमारा अतीत बहुत उज्ज्वल था इस बात को हम सभी जानते मानते हैं। इस बात की स्पृहा भी करते हैं कि हमारा देश, हमारा समाज और हमारा परिवार एक बार वैसा ही हो जाए। वैसी ही पूर्वकालीन सभ्यता विनम्रता, सौम्यता, अनुशासन और चारित्रिक महानता सब ओर दिखाई देने लगे। बच्चा-बच्चा शूरवीर, शालीन तथा संयमशील हो। स्त्रियाँ सच्चरित्र पतिव्रता, मृदुभाषिणी और गृहलक्ष्मी बनें। यह सब सोचते तथा आकांक्षा तो करते हैं, किंतु यह कभी नहीं सोचते कि पूर्वकाल में वैसा क्यों था और आज क्यों नहीं है?

हमारी पूर्वकालीन व्यवस्था तथा विचारधारा बड़ी ही उन्नत तथा आदर्श थी। घर पर उसके नियमों तथा योजनाओं का पालन होता था। परिवार सौम्य तथा संपत्ति के आगार बने थे। संतान सुसंस्कृत और पूर्ण विकसित होकर निकलती थी। सभ्य नागरिकता का प्रमाण देती थी और अपना जीवन समाज-सेवी के रूप से यापन करती थी। बच्चों को प्यार मिलता था, वृद्धों को श्रद्धा और नारियों को आदर मिलता तथा सभी सुखी और संतुष्ट रहते थे। सभी विकास और उन्नति करते थे।

व्यवस्था तथा नियम तो आज भी वही हैं, अंतर केवल यह हो गया है कि उनका समुचित रीति से पालन नहीं किया जा रहा है। आज भी यदि वही प्राचीन नियम तथा नीतियाँ पालन की जाने लगें तो युग बदलने लगे। सभी ओर प्राचीन परिस्थितियाँ दिखलाई देने लगें। यदि हम अपनी सुधार भावना के प्रति वास्तव में ईमानदार हैं, अपनी वर्तमान दुरावस्था के प्रति क्षुब्ध हैं, उसके प्रति हमारी घृणा सही है, तो आइए उन कारणों को खोजें और दूर करें जो इस पतित दशा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तरदायी हैं और उन तथ्यों को समझें और जीवन में उतारें जो आदर्श समाज और आदर्श परिवारों के पूर्वकाल में आधार रहे हैं।

जिस प्रकार परमात्मा और आत्मा में सिवाय छोटे-बड़े स्वरूप के और कोई अंतर नहीं है, इसी प्रकार समाज और परिवार में कोई अंतर नहीं है, वही बड़े और छोटे स्वरूप का ही साधारण अंतर है। परिवार का उत्थान-समाज का उत्थान, परिवार का सुख-समाज का सुख और परिवार की सेवा-समाज की सेवा है। यदि परिवारों को समुन्नत तथा आदर्श बना लिया जाए तो समाज आप से ही आप आदर्श बन जाएगा।

समाज सुधार में हाथ बटाना प्रत्येक व्यक्ति का पावन कर्तव्य है। उसे पूरा करना ही चाहिए। पर समाज बहुत विस्तृत क्षेत्र है। उसकी सारी बुराइयों को खोज सकना और दूर कर सकना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं। एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के किसी समूह में इतनी शक्ति नहीं कि वह पूरे समाज पर छा कर उसका सुधार कर ले। समाज का छोटा स्वरूप अपना परिवार है। परिवार को समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाना समाज का उत्थान करने की एक छोटी प्रक्रिया है। उसको क्रियात्मक रूप देने की प्रयोगशाला परिवार है। साथ ही जहाँ पूरे समाज पर हमारा नियंत्रण अथवा अधिकार नहीं है और न वह हमारा निर्देश अथवा नियंत्रण मानने को बाध्य है; वहाँ परिवार के साथ आत्म-भाव रहता है, उस पर अपना दबाब भी रहता है और हम जिस प्रकार की शिक्षा-दीक्षा देना चाहें दे, सकते हैं, जिस रास्ते चलना चाहें चला सकते हैं। परिजनों के उत्थान और विकास के लिए, सुख और समृद्धि के लिए हम जो कुछ भी कर सकें वह हमारे लिए हर्ष की ही बात होगी। समाज सेवा का परिपूर्ण अवसर परिवार के छोटे से क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त है और उतने का सुधार कर सकना सरल एवं साध्य भी है। यदि हम सब अपने कौशल, ज्ञान और क्षमता का पूरा-पूरा लाभ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देकर परिवार के माध्यम से समाज सेवा का पूरा उत्तरदायित्व निभाते चलें तो जल्दी ही वे परिस्थितियाँ आ सकती हैं, वह सुकाल आ सकता है, जो कभी प्राचीन युग में रहा है। शास्त्र का वचन है—

"तथा तथैव कार्यारित्र न कालस्तु विधीयते।
अभिन्नेव प्रयुज्जानो ह्यस्मिन्नेव प्रलीयते।।"

इस संसार के साथ हमारा संयोग है, इसी संसार में हमारा लय हो जाएगा, तब हमें जिस समय जो कर्तव्य हो, वही करना अनिवार्य है। व्यक्तिगत सुविधा अथवा असुविधा को लेकर कर्तव्य के पुण्य पथ पर चलते रहना चाहिए। दुष्ट नहीं होना चाहिए। इसलिए धर्म ने गृहस्थाश्रम को तपोभूमि कहकर उसकी महत्ता स्वीकार की है।

पूर्व काल में बच्चा जरा सयाना होते ही गुरुकुलों में भेज दिया जाता था। यहाँ के कुलपति-ऋषि अपने शिष्यों की शिक्षा तथा दीक्षा दोनों का ही प्रबंध किया करते थे। वे गुरुकुल छात्रों के शिक्षालय भी थे और घर भी। गुरुकुलों में सर्वांगपूर्ण विकास का वातावरण रहता था और उसमें पलकर बालक अपने भावी जीवन को समुन्नत बनाने की शिक्षा साधना किया करते थे। आज वैसा वातावरण शिक्षालयों में नहीं दीखता। अब यह कार्य प्रत्येक अभिभावक को स्वयं करना पड़ेगा। अपने घर का वातावरण ऐसा बनाना पड़ेगा जिसमें रहने और साँस लेने से परिवार का प्रत्येक व्यक्ति सभ्य नागरिक और सुशील परिजन बनने की प्रेरणा प्राप्त कर सके। हमारे घरों को गुरुकुलों की तरह दीक्षा विद्यालयों में परिणत हो जाना चाहिए और प्रत्येक अभिभावक तथा परिवार प्रमुख को कुलपति के रूप में। इसके लिए आवश्यक है कि जीविका उपार्जन और घर के लोगों की निर्वाह व्यवस्था के साथ-साथ ऐसे उपक्रम भी किए जाएँ जिससे घर में सुसंस्कारिता का वातावरण बने।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह कार्य माताएँ, महिलाएँ भलीभाँति कर सकती हैं। पुरुष तो प्राय: जीविकोपार्जन के कार्य में जुटे होने के कारण बाहर भी व्यस्त रहते हैं। माताएँ, गृहणियाँ इस कार्य को पूरे दायित्व के साथ निभा सकती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस संबंध में पुरुषों का कोई दायित्व ही नहीं है । परिवार निर्माण में रुचि लेना आपका भी कर्तव्य है। उनका ही नहीं परिवार के प्रत्येक जिम्मेदार और समझदार सदस्य का कर्तव्य है। परिवार के सभी लोग इस प्रक्रिया में भाग लें, पर आगे माताएँ ही रहें, क्योंकि परिवार के अन्य सदस्यों की अपेक्षा माताएँ ही उनके अधिक निकट होती है। बच्चे माँ के ही शरीर का एक भाग होते हैं। उनमें विद्यमान चेतना का सिंचन और परिपोषण माता के द्वारा ही होता है। गर्भस्थ शिशु के प्रसुप्त चेतना को जागृत और विकसित करने का काम माता का अचेतन ही करता है। प्रसव के उपरांत शिशु का आहार माता के वक्षस्थल से ही मिलता है। दूध भी रक्त जैसा ही एक रसायन है, जो माता के शरीर ही नहीं, मन की भी संयुक्त प्रक्रिया अपने साथ जोड़े रहता है। बच्चा इसी को पीता है और न केवल भूख बुझाता है—शरीर बढ़ाता है, वरन चिंतन एवं दृष्टिकोण का भी इसी अनुदान के आधार पर विकास करता है। अमीरों को छोड़कर सामान्यतया सभी के बच्चे रातों में माता के साथ सोते और दिन में उसी के इर्दगिर्द मंडराते रहते हैं। मानवी विद्युत के विज्ञान को जो लोग समझते हैं, उन्हें यह स्वीकार करने में तनिक भी कठिनाई न होगी कि प्रबल विद्युत संपन्न व्यक्ति अपने से दुर्बल साथियों को अनायास ही प्रभावित करता है और छाप छोड़ता रहता है। पर्यवेक्षण से इस तथ्य को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है कि मनुष्य पर सूक्ष्म स्तर का प्रभाव अन्य सबकी अपेक्षा माता का ही अधिक पड़ता है।

नवयुग की नई फसल के लिए धान रोंपने पड़ेंगे और उसके लिए नई भूमि तैयार करनी होगी। सभी जानते हैं कि ऊसर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंजर,रेतीली, खार वाली, खाद-पानी रहित, कंकड़-पत्थरों से भरी हुई ऊबड़-खाबड़ जमीन में अच्छी फसल उगाना अन्य ऊपरी उपचारों से भी संभव नहीं होता। अच्छी फसल पाने के लिए अच्छी भूमि की आवश्यकता समझी जा सकती है तो फिर यह मानने में किसी को कोई कठिनाई न होनी चाहिए कि अगली प्रखर पीढ़ी के निर्माण की भूमिका सुविकसित जननी के अतिरिक्त और किसी के लिए भी संभव नहीं हो सकती।

पीढ़ी से मतलब सौ-पचास वर्ष नहीं, दस-बीच वर्ष का निकटवर्ती भविष्य ही हो सकता है। जो बालक अभी दस वर्ष के हैं, वे दस-पंद्रह वर्ष बाद पच्चीस-तीस के होंगे और समाज को प्रभावित करनें वाली भूमिकाएँ निभाने में अपनी प्रतिभा का प्रयोग कर रहे होंगे। जो बच्चा पेट में है या प्रवेश करने वाला है, यह भी बीस वर्ष का होते-होते परिपक्वता के निकट पहुँचने और समाज को प्रभावित करने की स्थिति में होगा। पेट के, गोदी के या पढ़ने-खेलने वाले छोटे बालकों का समुदाय दस से लेकर बीस वर्ष के भीतर इस स्थिति में होगा कि उस समय का समाज उन्हीं के द्वारा गठित, संचालित एवं प्रभावित हो सके। मानवी भविष्य के निर्धारण एवं व्यापक परिवर्तनों की दृष्टि से यह अवधि कोई बड़ी नहीं है। सुदृढ़ पेड़ों को छायादार और फलदार बनते-बनते भी इतना तो समय लग ही जाता है।

युग-परिवर्तन हथेली पर सरसों की तरह जादुई ढंग से नहीं हो सकता। बड़े काम, बड़ी व्यवस्था, धैर्य, प्रयत्न, सूझबूझ एवं तैयारी के साथ संपन्न होते हैं। भविष्य को सुखद बनाने के लिए जिस प्रकार भौतिक सुविधा-साधनों की अभिवृद्धि के प्रयत्न चल रहे हैं, उससे भी अधिक उत्साह के साथ उत्कृष्ट व्यक्तित्वों के निर्माण का प्रयत्न योजनाबद्ध रूप से सँजोया जाना चाहिए। पत्ते सींचकर मुरझाए वृक्ष को तत्काल हरा-भरा कर देने की उतावली जिन्हें हो, जो तुर्तफुर्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब कुछ देखना चाहते हों, उनकी बात दूसरी है। अन्यथा इस भवन-निर्माण का प्रारंभ भूमि-पूजन के शुभारंभ सहित किया जाना चाहिए। यहाँ भूमि-पूजन से तात्पर्य है—नारी-उत्कर्ष! जाग्रत नारी ही उन विभूतियों एवं विशेषताओं से संपन्न हो सकती है, जिसके सहारे नई पीढ़ी का उत्कृष्टता के साथ जुड़ा हुआ उज्जवल भविष्य का स्वप्न साकार बन सकना संभव हो सके।

पीढ़ियाँ जनने ओर सुयोग्य बनाने से भी पूर्व पारिवारिक वातावरण का नव निर्माण आवश्यक है। बच्चों को प्रभावित करने के लिए तो यह आवश्यक है ही। आज की स्थिति में सुखद परिवर्तन लाने की दृष्टि से भी यह ऐसा कदम है, जो अविलंब उठाया जाना चाहिए। नारी को तो चौबीसों घंटे घर की चहार-दीवारी के भीतर रहना पड़ता है । बच्चे भी अधिकतर उसी में अपना समय गुजारते हैं। बड़े भी आजीविका-उपार्जन अथवा अन्य कार्यों के लिए दस-बारह घंटे से अधिक बाहर नहीं रहते, उन्हें भी अधिक समय नहाने, खाने, पीने, पारिवारिक कार्यों को देखने सँभालने के लिए घर में ही रहना पड़ता है। इस प्रकार वास्तविक जीवन का अधिकतर भाग घर-परिवार के कार्यक्षेत्र में ही गुजरता है।

पारिवारिक सुख के लिए अर्थ-साधनों की आवश्यकता से कोई इंकार नहीं करता, पर ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि इस प्रयोजन के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता सद्भावना एवं सुव्यवस्था की है। यह दोनों तत्त्व विद्यमान रहेंगे तो अभावग्रस्त परिस्थितियों में भी हँसते-हँसाते दिन गुजारे जा सकते हैं। स्नेह, सौभाग्य, सहकार, सद्व्यवहार ही वह पूँजी है, जिसके सहारे एक साथ रहने वाले मनुष्य पारस्परिक आदान-प्रदान से छोटे से परिवार में स्वर्गीय वातावरण का सृजन कर सकते हैं। स्वर्ग में हर्षोल्लास की परिस्थितियाँ मिलने की कल्पना की जाती है। उसका व्यावहारिक और प्रत्यक्ष रूप देखना हो तो किसी सद्गृहस्थ के घर-परिवार में प्रवेश करके देखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकता है। ऐसे स्नेहसिक्त वातावरण में रहने के लिए हर किसी का मन ललचाएगा, भले ही वहाँ साधनों की न्यूनता का ही सामना क्यों न करना पड़े। ऐसे ही परिवारों में सुसंस्कारी बालक विकसित होते हैं और उन्हीं का परिष्कृत व्यक्तित्व बड़े होने पर उन्हें महामानवों की श्रेणी में ला बिठाता है। जिंदगी को चैन से गुजारने के लिए भी ऐसी ही पारिवारिक परिस्थितियाँ होनी चाहिए।

प्रश्न यहाँ भी यही उत्पन्न होता है कि ऐसा वातावरण किस प्रकार उत्पन्न हो, उसका सृजन कौन करे? इस ताले की कुँजी सुगृहिणी के हाथ में, है। नर सुयोग्य और सुसंपन्न होने पर इस संदर्भ में हाथ बँटा सकता है, साधन जुटा सकता है, पर आगे बढ़कर कोई बड़ी भूमिका नहीं निभा सकता, यह उसके लिए संभव नहीं हो सकता, क्योंकि उसकी भूमिका परिवार व्यवस्था में बहुत ही स्वल्प होती है। नहाने, खाने, सोने जैसे ढर्रे के नित्य-कर्मों को करने में ही उसका अधिकांश समय बीत जाता है। निपटने के बाद तुरंत आजीविका-उपार्जन अथवा दूसरे आवश्यक कार्यों के लिए उसे बाहर भागने की जल्दी पड़ती है। ऐसी दशा में वह झल्लाने-समझाने की रस्म पूरी कर देने के अतिरिक्त कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा ही नहीं पाता। यह कार्य तो सुयोग्य गृहिणी ही कर सकती है। गृह-लक्ष्मी जो नाम दिया गया है, यह अलंकार या भावुकता नहीं—उसके पीछे तथ्य है। लक्ष्मीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व ने अपने लोक को स्वर्ग बनाया, इस पौराणिक प्रतिपादन का प्रत्यक्ष उदाहरण देखना हो तो किसी गृह-लक्ष्मी के घर में जाकर वहाँ बरसने वाले स्नेह, सौजन्य और सज्जनोचित्त क्रियाकलापों के माध्यम से सहज ही देखा जा सकता है।

हमारे घरों में ऐसा वातावरण बने तो उस प्रयोजन की बहुत कुछ पूर्ति मात्र भावनात्मक आधार पर ही हो सकती है, जिसके लिए प्रचुर संपदा का संग्रह आवश्यक समझा जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के लिए नई पीढ़ी कार्यक्षेत्र में उतरे, इसकी प्रतीक्षा करने की भी आवश्यकता नहीं है। आज जैसी भी कुछ परिस्थितियाँ है, उन्हीं में परिवारों के उद्यान इस स्तर के बनाए जा सकते हैं, जिनमें लगे वृक्ष आज की अपेक्षा कल ही अधिक छाया, हरियाली और फल-फूलों की संपदा प्रदान करने लगें। परिवारों का वातावरण सुसंस्कारी बनाया जा सके तो उसमें रहने, पलने वाले व्यक्ति कुछ ही समय में दूसरे ढाँचे में ढले हुए प्रतीत होंगे और परिवर्तन की प्रक्रिया कल से ही आरंभ हो जाएगी।

आंदोलनों के चकाचौंध में हमें वे ही महत्त्वपूर्ण मालूम पड़ते हैं, जिनके लिए धुआँधार शोर मचता है और कर्णभेदी नगाड़े बजते हैं। लोग यह भूल जाते हैं कि महत्त्व उपद्रवों, धमाकों एवं बवंडरों का नहीं, वरन उन सृजनात्मक प्रवृत्तियों का है, जो मनुष्य की अंत: चेतना को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। परिवारों का वातावरण यदि परिष्कृत किया जा सके तो उनमें पलने और परिपक्व होने वाले व्यक्ति कल से ही प्रसन्नचित्त, सत्प्रयोजनों में निरत और संतुष्ट-उल्लसित दिखाई पड़ सकते हैं। ऐसे लोगों की न केवल क्रियाशक्ति, विवेकशक्ति ही बढ़ेगी, वरन वे सृजनात्मक प्रयोजनों में बढ़-चढ़कर अनुदान भी प्रस्तुत कर रहे होंगे।

व्यक्ति और समाज की मध्यवर्ती कड़ी परिवार है। लोग व्यक्ति की समीक्षा करते हैं और समाज की आलोचना करते हैं। इन्हीं दो को सुधारने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न होते और आंदोलन चलते हैं, पर यह भुला दिया जाता है कि व्यक्ति के निर्माण का अधिकांश उत्तरदायित्व परिवार पर है और समाज की भी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है, परिजनों के समूह का नाम ही समाज है। परिवार ही यह मध्यबिन्दु, न्यूक्लियस है, जिसकी धुरी पर सारा शक्ति, संतुलन टिका हुआ है। यदि परिवार का महत्त्व स्वीकारा जाए तो फिर यह मानने में कोई कठिनाई न रहेगी कि उसका स्तर एवं वातावरण बनाने में सुसंस्कृत-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी ही प्रधान भूमिका प्रस्तुत कर सकती है। अन्य लोग तो उसके सहायक, समर्थक भर हो सकते हैं। नारी-उत्कर्ष अभियान प्रकारांतर से परिवारों को स्वर्ग समतुल्य बनाने का ऐसा सृजनात्मक काम है, जिसके सत्परिणामों को सोचने भर से आँखें चमकने लगती हैं।

उपरोक्त दो बातें तो इस उथली दृष्टि से सोची गई हैं, जैसे कि गाय पालने से दूध, खाद और बछड़े आदि मिलने के लाभों का लेखा-जोखा लगाया जाता है। यदि और अधिक मानवीय दृष्टिकोण से नारी-समस्या पर विचार करना हो तो फिर यों सोचना पड़ेगा कि नारी भी मनुष्य है। हर मनुष्य ईश्वर-प्रदत्त कुछ मौलिक अधिकार अपने साथ लेकर आता है। उस पवित्र धरोहर पर अनावश्यक और अवांछनीय प्रतिबंध नहीं लगाए जाने चाहिए। नारी यदि मनुष्य है तो उसे स्वास्थ्य-रक्षा का, शिक्षा का, स्वावलंबन का अधिकार क्यों नहीं होना चाहिए। विकसित होने की इच्छुक कली को मसल कर क्यों रख दिया जाना चाहिए। अस्तित्व की रक्षा—उमंगों की स्वतंत्रता और विकास की अनुकूलता चाहना कोई ऐसा अपराध नहीं है, जिसे बलपूर्वक रोका जाए और परंपराओं के नाम पर हथकड़ी-बेड़ी की तरह पहनाकर रोका जाए।

पददलित नारी से किसने क्या पाया? वह अपने पालने वालों के लिए गले का पत्थर बनकर रह गई। कैदी भी जेल में कुछ श्रम करते हैं, पर जेलर से लेखा-जोखा माँगने पर वे स्वत: स्वीकार करेंगे कि यह घाटे का व्यवसाय है। कैदी जो कमाते हैं, उससे कई गुना खर्च उनके ऊपर बैठता है। प्रतिबंधित नारी भी अपने संरक्षकों के लिए किस प्रकार उपयोगी और लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

यदि नारी को उसके मौलिक मानवीय अधिकार वापिस लौटा दिए जाएँ तो उसमें नर नहीं—अनाचार ही हारेगा। इस विजय में नारी की नहीं, न्याय की ही जीत होगी। जो लोग न्याय औचित्य,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समानता, मनुष्यता, धर्म, कर्तव्य आदि का समर्थन, प्रतिपादन करते हैं और अवांछनीयता को निरस्त करना चाहते हैं, उन्हें यह कार्य अपने घर से ही आरंभ करना चाहिए। हमारे परिवारों में प्रत्येक नारी को यह अनुभव होना चाहिए कि वे कैदी की तरह विवशतापूर्वक नहीं, इस घर में सृजन-शिल्पी बनकर रह रही हैं। उसके ऊपर कर्तव्य तो लदे हैं, पर कुछ अधिकार भी हैं। कम से कम अपनी स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा एवं स्वावलंबन के लिए मानवोचित सुविधाएँ प्राप्त कर सकने की छूट उसे मिल गई है। ऐसा किया जा सके तो घर से बाहर भी हमारी आवाज में वह बल होगा, जिससे न्याय का समर्थन उचित ठहराया जा सके।

करनी और कथनी में अंतर रखकर हम किसी को भी ऐसा उपदेश नहीं दे सकते, जिसे अपनाने के लिए वह सहमत हो सके। सामाजिक न्याय इस युग की सबसे प्रबल माँग है। वह अपने उद्देश्य की दिशा में एक-एक कदम आगे बढ़ रही है। संभवत: वह इतनी प्रचंड है कि कोई इसे रोक न सकेगा। अच्छा हो कि हम अपने घरों में इसका स्वागत—समर्थन आरंभ करें और सिद्ध करें कि समय की माँग को समझने और स्वीकार करने में हम समर्थ हो गए हैं।

विकसित नारी अपने अस्तित्व को समुन्नत बनाकर—राष्ट्रीय-समृद्धि के समर्थन में कितना बड़ा योगदान दे सकती है? इसे उन देशों में जाकर आँखों से देखा या समाचारों से जाना जा सकता है, जहाँ नारी को मनुष्य मान लिया गया है और उसके अधिकार उसे सौंप दिए गए हैं। उपयोगी श्रम करके वहाँ वह राष्ट्रीय-प्रगति में योगदान दे रही है—परिवार की आर्थिक समृद्धि बड़ा रही है। सुयोग्य बनकर अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रही है और परिवार को छोटा-सा उद्यान बनाने में और उसे सुरभित पुष्प-पल्लवों से भरा-पूरा बनाने में सफल हो रही है। नर के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वाली नारी किसी पर भार नहीं बनती, साथियों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहारा देकर प्रसन्न होती और प्रसन्न रखती देखी जा सकती है। हम विकसित देशों के प्रशंसक हैं, भाषा, पोषाक आदि को अपनाने में गर्व अनुभव करते हैं, फिर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उनके व्यवहार में आने वाले सामाजिक-न्याय की नीति को भी अपनाएँ और कम से कम अपने घरों में नारी की स्थिति सुविधाजनक एवं सम्मानास्पद बनाने में भी पीछे न रहें।

नारी-देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है। यों दोष तो सब में रहते हैं, सर्वथा निर्दोष तो परमात्मा है। अपने घरों की नारियों में भी दोष हो सकते हैं, पर तात्त्विक-दृष्टि से नारी की अपनी विशेषता है—उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति। बेटी, बहिन, धर्मपत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्शों से भरापूरा जीवनयापन करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक-संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा। नारी को प्रजनन उत्तरदायित्व उठाने के कारण शारीरिक दृष्टि से थोड़ा दुर्बल भले ही रहना पड़ा हो, पर आत्मिक-विभूतियों की बहुलता को देखते हुए वही ईश्वरीय दिव्य अनुकंपा की अधिक अधिकारिणी बनी है। अगले दिनों द्रुतगति से बढ़ता चला आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्म मान्यताओं से भरापूरा होगा। मनुष्यों का चिंतन, दृष्टिकोण उसी स्तर का होगा। व्यवस्थाएँ और परंपराएँ उसी ढाँचे में ढलेंगी। जन-साधारण की गतिविधियाँ उसी दिशा में उन्मुख होंगी, शासनतंत्र, धर्मतंत्र, समाजतंत्र और अर्थतंत्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुर्ननिर्मित होगा। ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निबाहनी पड़ेंगी, विशेष उत्तरदायित्व सँभालने पड़ेंगे। कारण कि अध्यात्म की विभूतियाँ जन्मजात रूप से उसी को अधिक परिमाण में उपलब्धि हुई हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी-उत्कर्ष की आवश्यकता का प्रतिपादन करने और औचित्य सिद्ध करने के अनेक आधार हैं। उनमें से किसी को भी अपनाकर विचार किया जाए तो आवश्यक प्रतीत होगा कि समय की माँग को देखा जाए—उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखा जाए तो नारी-जागरण अपने समय का सबसे बड़ा काम प्रतीत होगा। अच्छा हो कि औचित्य को अपनाने के लिए अग्रगामी बनने वाले विवेकशीलों की पंक्ति में हमारा नाम भी सम्मिलित रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिलाओं को यह करना ही चाहिए

स्त्री को परिवार का हृदय और प्राण कहा जा सकता है। परिवार का संपूर्ण अस्तित्व तथा वातावरण गृहिणी पर निर्भर करता है। यदि स्त्री न होती तो पुरुष को परिवार बनाने की आवश्यकता न रहती और न इतना क्रियाशील तथा उत्तरदायी बनने की। स्त्री का पुरुष से युग्म बनते ही परिवार की आधार-शिला रख दी जाती है और उसे बुरा अच्छा या, बुरा मानने की प्रक्रिया भी आरंभ हो जाती है।

परिवार बसाने के लिए अकेला पुरुष भी असमर्थ और अकेली स्त्री भी। पर मुख्य भूमिका किसकी है, यह तय करना हो तो स्त्री पर ही ध्यान केंद्रित हो जाता है। क्योंकि अंदरूनी व्यवस्था से लेकर परिवार में सुख-शांति और सौमनस्य के वातावरण का दायित्व प्राय: स्त्री को ही निभाना पड़ता है। इसलिए स्त्री के साथ गृहिणी, सुगृहिणी, गृह-लक्ष्मी जैसे संबोधन जोड़े गए हैं। पुरुष के लिए ऐसा कोई विशेषण नहीं मिलता।

यहाँ गृहिणी से तात्पर्य केवल पत्नी से ही नहीं है। स्त्री चाहे जिस रूप में हो, वह जिस परिवार में रहती है, वहाँ के वातावरण को अवश्य प्रभावित करती है। माता, पत्नी, बहन, बुआ, चाची, ताई, दादी, ननद, देवरानी, जेठानी, भाभी आदि सभी रूपों में परिवार के निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है और वहाँ के वातावरण को, उस घर के सदस्यों को प्रभावित करती है। कारण है कि पुरुष तो अधिकांशत: बाहर रहते हैं, वृद्ध या असमर्थ पुरुष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घर में रहते भी हों तो वे स्त्री की तरह वहाँ के वातावरण को प्रभावित नहीं करते। क्योंकि स्त्री में कोमलता, संवेदना, करुणा, स्नेह और ममता की जो हार्दिक विशेषताएँ होती हैं, वे पुरुषों में नहीं होती। इन विशेषताओं के कारण ही महिलाएँ घर के सदस्यों के अधिक निकट रहतीं और उन्हें प्रभावित करती है।

पुरुष या पिता में एक बारगी कोई दुर्गुण भी हो तो भी माँ अपनी संतान को उससे बचा सकती है। शिवाजी के पिता—मुसलमान राजा के दरबार में नौकरी करते थे और उनकी अधीनता को मानते थे। पर जीजाबाई अपने पुत्र को स्वातंत्र्य-योद्धा के रूप में ही विकसित करना चाहती थी। इसके लिए उन्होंने आवश्यक सभी सतर्कताएँ बरतीं। अपने पति के प्रभाव से बचाया और शिवाजी को उसी ढाँचे में ढाला। आश्चर्यजनक हो सकता है यह कि पिता जिसके प्रति कृतज्ञ हों, जिसकी रोटी खाते हों और यह भी चाहते हों कि पुत्र भी उन्हीं की तरह निकले, किंतु पुत्र विपरीत दिशा में ही विकसित हो और अलग ही मनोभूमि रखने वाला बन जाए। लेकिन माँ के महत्त्व को देखते हुए यह अस्वाभाविक नहीं है। सामान्य जन-जीवन में भी अयोग्य और दुर्व्यवसनी पिता की संतानें योग्य तथा सच्चरित्र बन जाती हैं। इसका कारण यही है कि वहाँ माताएँ दोष-दुर्गुणों से होते रहने वाले कटु-अनुभवों की पुनरावृत्ति संतान में न आने देने के लिए विशेष रूप से प्रयत्नरत रहती हैं। यह भी देखा जाता है कि ईमानदार, विश्वासपात्र और सचरित्र व्यक्तियों की संतानें कभी बेईमान, धोखेबाज और चरित्रहीन निकल जाती हैं। यह भी इसलिए कि माताएँ तथा परिवार में रहने वाली स्त्रियाँ बच्चों के प्रति विशेष रूप से सावधानियाँ नहीं रखतीं तथा कई भूलें और त्रुटियाँ कर डालतीं हैं, जिनका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है।

संतान के निर्माण में ही नहीं परिवार के समूचे निर्माण में भी पुरुष की अपेक्षा नारी की भूमिका हजार गुनी अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महत्त्वपूर्ण और अधिक प्रभावशाली है। इसलिए स्वामी दयानंद ने कहा है—'एक पुरुष के शिक्षित और सुसंस्कारित होने का अर्थ है, अकेले उसी का उपयोगी बनना और एक माँ यदि शिक्षित, समझदार तथा सुयोग्य हो तो समझना चाहिए पूरा परिवार आदर्श-रूप बन गया, नर-रत्नों की खदान निकल आई।' लेकिन हमारे देश में अभी वह सौभाग्य-सूचक स्थिति नहीं आ पाई है, जिसमें कि सभी नर-रत्न हो सकें। किसी समय में भारत में ३३ करोड़ नर-रत्न रहे होंगे जिन्हें तेंतीस कोटि देवताओं के नाम से पुकारा जाता था, पर अब वह बात पुराण-कल्पना ही लगती है। ऐसा लगना स्वाभाविक भी है, क्योंकि भारतीय समाज का अध्ययन करते समय नारी का जो रूप उभरकर सामने आता है, उसे देखकर विश्वास नहीं होता कि कभी वह नर-नारायण की जननी रही होगी।

इसलिए परिवार-निर्माण के महान उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए नारी को अपनी योग्यता, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता विकसित करनी चाहिए, शारीरिक दृष्टि से रुग्ण, कमजोर तथा मानसिक दृष्टि से अविकसित, स्त्रियाँ अपना तो निर्माण कर ही नहीं सकतीं, परिवार का निर्माण कहाँ से करेंगी। शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं निरोग बनने के लिए प्रकृति के नियमों का पालन नितांत आवश्यक है। प्रकृति बड़ी कठोर है और वह किसी के द्वारा भी नियम का उल्लंघन सहन नहीं करती। जो भी उपेक्षा करेगा, उसे रोग और दुर्बलता का दंड भुगतना ही पड़ेगा। स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली आदतों से सभी परिचित हैं, उन्हें छोड़ दिया जाए और संयमित, नियमित तथा व्यवस्थित रहन-सहन अपनाया जाए तो आरोग्य और शक्ति आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

माताएँ स्वयं प्राकृतिक नियमों का पालन करने लगें तो स्वयं उनका स्वास्थ्य तो ठीक रहेगा ही, घर के अन्य सदस्यों को भी इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेरणा मिलती रहेगी, वे भी उन नियमों का पालन करने लगेंगे। अन्यथा स्वयं नियमों का उल्लंघन करते रहा जाए और घर के अन्य सदस्यों, बच्चों को नियम पालन के लिए कहा जाए तो यह कभी भी नहीं हो सकता। स्वयं के लिए हो या दूसरों के लिए, घर में खाने के लिए चटपटी, मिर्च-मसाले की तली-गली-सड़ी चीजें बनाई जाएँ तो न स्वयं की स्वास्थ्य रक्षा हो सकती है और न घर के अन्य सदस्यों पर समझाने-बुझाने का प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक-विकास के लिए जहाँ प्रकृति के नियमों का पालन आवश्यक है, वहीं मानसिक विकास के लिए शिक्षा की भी आवश्यकता है। अच्छा तो यही है कि लड़कियों को आरंभ से ही पढ़ाया जाए। पर जिन महिलाओं को बचपन में ऐसी सुविधा नहीं मिली है, उन्हें अपने परिवार के सदस्यों से, शिक्षित स्वजनों से पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए। घर के जिम्मेदार सदस्यों को भी चाहिए कि वे वस्त्र, भोजन और आवास की तरह ही शिक्षा को भी प्राथमिक आवश्यकता मानें और घर की अशिक्षित महिलाओं के लिए उनकी व्यवस्था करें। आभूषण, सौंदर्य प्रसाधन, शृंगार, फैशन, टीपटॉप और मनोरंजन से भी अधिक महत्त्व शिक्षा को दें। विद्या से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं है और अज्ञान से बढ़कर कोई दारिद्र्य नहीं है।

शिक्षित महिलाएँ अपने परिवार की अशिक्षित महिलाओं को पढ़ा सकती हैं। आजकल कई ऐसी समाज-सेवी संस्थाएँ भी काम कर रही हैं जो प्रौढ़-महिला-शिक्षा की व्यवस्था करती हैं। पास में वैसी कोई सुविधा हो तो उसका लाभ भी उठाना चाहिए और शिक्षा की आवश्यकता को अविलम्ब पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

शिक्षित महिलाएँ अपने अर्जित ज्ञान और विकसित क्षमता का लाभ पूरे परिवार की देती रह सकती हैं। अशिक्षित और निरक्षर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्रियों में ज्ञान और क्षमता जैसी चीज मिलना असंभव-सा है। उनका ज्ञान अपने आस-पास तक ही सीमित रहता है और योग्यता केवल चौके-चूल्हे में ही प्रयुक्त होती है। इसके विपरीत शिक्षित स्त्रियाँ अपनी नयी-नयी जानकारियों का लाभ पूरे परिवार को देती रहती हैं। उन्हें बच्चों का पालन-पोषण ही नहीं, उनके विकास और निर्माण की कला भी आती है।

महिला-शिक्षा के लिए शिक्षित महिलाएँ सेवा-भावना से भी प्रयास कर सकती हैं। प्रतिभा का उपयोग लाभ उठाने में नहीं, लाभ देने में करना अधिक गौरवपूर्ण है। महिला-शिक्षा के लिए कुछ परिवारों में से सामूहिक रूप से, मुहल्ले या गाँव की शिक्षित महिलाओं को प्रयत्न करना चाहिए। फुरसत के समय जब पास-पड़ौस की महिलाएँ मिलकर बैठती हैं तो घंटों समय व्यर्थ की गप्पबाजियों और निंदा-चुगलियों में बीत जाता है। उस समय का उपयोग यदि ज्ञान-चर्चा, शिक्षा-अभ्यास और प्रेरक कथा-प्रसंग कहने-सुनने में किया जाए तो न कोई अतिरिक्त समय लगता है और न व्यर्थ की गप-शप से वैर-वैमनस्य पैदा होने की संभावना रहती है।

स्वास्थ्य और शिक्षावृद्धि के लिए स्वयं तथा परिवार को लक्ष्य रख कर किए जाने वाले प्रयत्नों के अतिरिक्त एक तीसरा प्रयास और भी महत्त्वपूर्ण है। वह है—घर की सुव्यवस्था तथा परिवार को सुसंस्कृत बनाने की चेष्टा। कहा जा चुका है कि ठोस प्रभाव कह-सुनकर नहीं, स्वयं के माध्यम से आदर्श प्रस्तुत करके ही उत्पन्न किए जा सकते हैं। प्राय: देखा जाता है कि घरों में स्वच्छता और सुरुचिपूर्ण सुसज्जा का अभाव रहता है। स्वयं गृहिणी का इस ओर कोई ध्यान नहीं तो परिवार के अन्य सदस्य भी इस विषय में कोई ध्यान नहीं देते। घर की यह अस्त-व्यस्तता बताती है कि यहाँ आलस्य और प्रमाद का राज्य है। आलस्य और प्रमाद में मानव-जीवन का बहुत बड़ा दोष समझा गया है और उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिचय गंदगी के रूप में मिलता है। इसलिए गृहिणी को स्वयं साफ-स्वच्छ रहने के साथ-साथ घरों में भी सुरुचि और सुसज्जा का वातावरण बनाना चाहिए एवं घर के अन्य लोगों में भी स्वच्छता के संस्कार डालने चाहिए।

गृहिणी को 'गृह-लक्ष्मी' के सम्मानजनक विशेषण से संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ है—वह नैतिक दृष्टि से सुदृढ़ और स्वभाव की दृष्टि से देवी है। मधुरता तथा सद्भाव का अमृत उसमें बहता रहता है, जिसके द्वारा वह घर के अशांत सदस्यों को धैर्य बँधाती, दिशा बताती देती है और परिवार-संस्था की नींव भी मजबूत बनाती है।

परिवार में सुख-शांति का आधार उसके सदस्यों में रहने वाला स्नेह, सहयोग और सद्भाव है। घर में इसी से स्वर्गीय-वातावरण का सृजन होता है। इसलिए गृहिणी को इसके लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील रहना चाहिए। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे की सुविधा का ध्यान रखें, परस्पर आदर-सम्मान दें, एक दूसरे का सहयोग करें और स्नेह, सद्भाव, आत्मीयता तथा उदारता बरतें। इसके लिए प्रेरणाएँ भरने का काम भी स्त्री ही अधिक कुशलतापूर्वक कर सकती है।

स्वयं अपना व्यवहार भी उस स्तर का रखना चाहिए, तथा छोटों के प्रति असीम दुलार, स्नेह, समता तथा बड़ों के प्रति श्रद्धा और सम्मान बरतना चाहिए। इस तरह की प्रेरणाएँ भरने के लिए रात्रि में सोते समय पारिवारिक-गोष्ठियाँ करने, बच्चों को प्रेरणाप्रद कथा-गाथाएँ सुनाने का काम भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

कई बार ऐसे प्रसंग आते हैं, जब घर के लोगों में आपस में ही एक दूसरे के प्रति गुत्थियाँ और संधियाँ बन जाती हैं तथा मन-मुटाव रहने लगता है। इन समस्याओं का समाधान और गुत्थियों का सुलझाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी विवेक और समझदारी के साथ किया जा सकता है। पुरुष जिस तरह परिवार की भौतिक कठिनाइयाँ हल करता है, तत्संबंधी समस्याओं का समाधान करता है, उसी तरह गृहिणी को भी परिजनों की भावात्मक तथा विचारात्मक समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करना चाहिए।

पूरे परिवार के दोष-दुर्गुणों और बुराइयों के दुःखदायी प्रभाव नारी अपने ऊपर सहन करती है। यह सहनशीलता स्तुत्य है, पर इतना भर पर्याप्त नहीं है। उन्हें सहन करते रहना और उनके समाधान की कोई चेष्टा न करना—प्रच्छन्न रूप से दोष-दुर्गुणों को बढ़ावा देने जैसा है। यह ठीक है कि मनुष्य के स्वभाव में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही भरी पड़ी हैं। उसमें देवोपम गुण हैं तो पशु-तुल्य कुसंस्कारों की भी कमी नहीं। गौरावास्पद तो यही है कि अच्छाइयों को उभारा जाए और बुराइयों को दबाया या नष्ट किया जाए। पिछले कई जन्मों से पशु-योनियों में भटकते हुए उनके संस्कार लेकर जन्मा मनुष्य वह प्रभाव शीघ्र छोड़ देगा—यह सरल नहीं है। पर नारी के लिए सरल हो सकता है, क्योंकि मनुष्य की नकेल उसके हाथ में तभी से आ जाती है, जबकि वह जन्म लेता है और वह उसी समय से आवश्यक सावधानी तथा सूझबूझ बरते तो परिवार की स्वामिनी होने के नाते घर के सदस्यों को मनचाही शिक्षा दे सकती है। मनोवैज्ञानिकों के लिए स्वभाव परिष्कार भले ही कठिन हो, पर नारी के लिए, माँ के लिए यह नितांत सरल है। वह यह काम आसानी से कर सकती है और मनुष्य की निर्मात्री होने के कारण इसे करने में ही उसकी शान है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण और नवयुग सृजन

परिवार निर्माण की आवश्यकता और उपयोगिता समझ लेने के बाद प्रश्न उठता है कि उसके लिए क्या किया जाना चाहिए? कौन से कार्यक्रम अपना कर परिवारों में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का समावेश किया जा सकता है? इसका व्यावहारिक मार्गदर्शन परिवार निर्माण अभियान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का उद्देश्य लेकर चलाए जा रहे, युग निर्माण अभियान के क्रियाकलापों में परिवार निर्माण को मूर्धन्य माना जाना चाहिए।

इस अभियान में प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सक्रिय भाग लेने का आह्वान किया गया है? भावनाशील, जागृत और नव-निर्माण की आवश्यकता समझने, स्वीकार करने तथा उस दिशा में अपना विशिष्ट उत्तरदायित्व निभाने वाले विचारशील व्यक्तियों का इस अभियान को समर्थन सहयोग मिला है और देश-विदेश में फैले हुए इस युग निर्माण मिशन का संगठनात्मक ढाँचा पारिवारिकता के आधार पर खड़ा किया गया है। समाज गठन का आधार भी यही होना चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम् का सूत्र हर व्यक्ति की भाव संवेदना और विचारणा पर छाया रहना चाहिए। इसी अति सरल नितांत स्वाभाविक और परम श्रेयस्कर रीति-नीति का जन-जन को अवलंबन करना चाहिए। यह है युग सृजन का तत्त्वदर्शन, जिसे इस अभियान को आरंभ करते समय ही संगठन के नाम के साथ जोड़ा और प्रत्येक संबंद्ध व्यक्ति को अवगत कराया गया था। उज्ज्वल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भविष्य की समस्त संभावनाएँ इसी मान्यता के क्रियान्वित होने पर केंद्रीभूत हैं।

संगठन में प्रत्येक घटक के—सदस्य को परिजन कहा जाता रहा है, परिजन अर्थात कुटुंबी। संचालन एवं संचालकों का ही कुटुंब बनकर नहीं रहना वरन सभी संबद्ध व्यक्तियों को परस्पर कौटुम्बिकता का प्रगाढ़ परिचय देना है, यही इस मिशन की आचार संहिता का तत्त्वदर्शन है। अन्य संगठन उथले आधारों पर खड़े होते हैं—उत्तेजना के वातावरण में जीते और परिस्थितियाँ बदलते ही बिखरते रहते हैं। उथले आधार पानी के बुलबुले से बड़ा उदाहरण प्रस्तुत भी नहीं कर सकते।

आर्थिक छीना-झपटी, वर्ग संघर्ष, आक्रमण, संरक्षण, अपनों का पक्ष समर्थन, असुविधाओं का निराकरण यही है आज के संगठनों के प्रेरणा स्रोत। यह सभी निग्रहों और अनर्थों के रहने तक ही जीवित रह सकते हैं। आवश्यक नहीं कि विकृतियाँ देर तक ठहरें अथवा वर्तमान स्वरूप में ही बदलती रहें। हवा के दबाब से बादलों की आकृतियाँ बदलती रहती हैं और कई तरह के परिवर्तनों से परिस्थितियों में हेर-फेर होता रहता है ऐसी दशा में उत्तेजना का कारण बदलते ही उस आधार को लेकर खड़े होने वाले और जीवित रहने वाले संगठन भी समाप्त हो जाते हैं। किसी समय के प्रचंड आंदोलनों में बंग-भंग, नमक सत्याग्रह, असहयोग, खिलाफत, बम क्रांति, गदर आदि का उल्लेख किया जा सकता है जो अपने समय में गगनचुंबी बने हुए थे। अब न वे संगठन कहीं दिखाई पड़ते हैं और न उनकी गतिविधियों का कोई अस्तित्व है।

भूकंप, बाढ़, महामारी, दुर्घटना, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि कारणों से होने वाली क्षति को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े प्रयास आरंभ होते हैं। उन दिनों सभी का ध्यान उन पर केंद्रित रहता है। स्थिति सँभलते ही सारा सिराजा बिखर जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि निषेधात्मक कारणों के आधार पर खड़े होने वाले संगठन स्थायी नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो सकते। स्थायी तो मात्र सृज़न है, नव-निर्माण की प्रक्रिया को स्थायित्व प्रदान किया जाना है इसलिए उसके आधार को सृजन-समर्थक रखा गया है।

इस संदर्भ में परिवार संस्था के नाम को प्राथमिकता दी जाती है। यह मानवी सभ्यता की जननी है। पारिवारिकता पहले उत्पन्न हुई—सभ्यता पीछे जन्मी। यदि मनुष्य में यह प्रवृत्ति विकसित न होती तो उसकी स्थिति जलाशयों में रहने वाले मत्स्य-मेंढ़कों और आकाश में उड़ने वाले मक्खी, मच्छरों से अधिक अच्छी न होती। विकास युग में प्रवेश करने का प्रथम चरण परिवार गठन के रूप में ही सामने आया। अन्यथा बंदरों की औलाद कहा जाने वाला मनुष्य अब तक भी वनमानुष की तरह जीवनयापन करता और अस्तित्व रक्षा की लड़ाई लड़ता दृष्टिगोचर होता। परिवार संगठन-सृजन उद्देश्यों को लेकर खड़ा हुआ है। इसलिए वह अक्षय वट की तरह अमर है, दिन बीतते जाते हैं और उसकी जड़ें मजबूत होती जाती हैं।

सामाजिक और आर्थिक आधार पर 'लार्जर फैमिली' सिद्धांत को मान्यता मिल चुकी है। अगले दिनों उसका प्रयोग ही नहीं प्रचलन भी होने जा रहा है। दर्शन और अध्यात्म ने पहले ही उसे मूर्धन्य ठहराया है और वसुधैव कुटुम्बकम् की मान्यता को सर्वतोमुखी प्रगति का आधार तत्त्व बताया गया है। उसी सनातन सत्य पर से धूलि झाड़ने—मात्र रगड़कर निखारने—पूर्ण व्यवस्था सजाने का कार्य अपने मिशन ने हाथ में लिया है, उसकी उपयोगिता सँभावना के संबंध में दो मत नहीं हो सकते।

गायत्री परिवार और युग निर्माण परिवार दो नाम नहीं वरन एक ही प्रगति क्रम के दो चरण हैं। जिन्हें परस्पर पूरक—अन्योन्याश्रित कहा जा सकता है। गायत्री दर्शन है और युग निर्माण कार्यक्रम। एक से प्रेरणा मिलती है दूसरे से दिशा। गायत्री आत्मदर्शन का नवनीत है। ऋतुंभरा प्रज्ञा की उच्चस्तरीय दूरदर्शिता अपनाने में ही मनुष्य का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अत्यधिक हितसाधन है। आस्थाओं के क्षेत्र की विकृतियों का निष्कासन और सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन जिस कौशल और उपकरण से किया जाना है उसे एक शब्द में गायत्री कह सकते हैं। भावना एवं आग्रह की कठिनाई से नाम दूसरा भी हो सकता है। किंतु प्रगति और शांति की चिरस्थायी आधार शिला ऋतुंभरा—प्रज्ञा—गायत्री के अतिरिक्त और कुछ हो सकती है, उसकी कल्पना भी नहीं बनती है। गायत्री परिवार को उसी दर्शन के भाव सूत्र में बँधा हुआ परिकर समझा जा सकता है। उपासना से आरंभ होने वाला प्रयोग अंततः दर्शन को हृदयंगम करके रहेगा ही।

युग निर्माण का तात्पर्य है—प्रचलन के प्रवाह को उत्कृष्टता की दिशा में मोड़, मरोड़ देना। व्यक्ति विशेष को धनी, विद्वान, बलिष्ठ, समर्थ, सिद्ध, बना देने से सामूहिक प्रगति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सामर्थ्य तो वातावरण में होती है। हवा के दबाब से पत्ते उड़ते हैं। वातावरण के दबाब से मनुष्य खिलौने की तरह ढलते हैं—अस्तु उज्ज्वल भविष्य की संरचना के लिए वैयक्तिक उन्नति से भी अधिक ध्यान इस तथ्य पर किया जाना है कि सामूहिक प्रचलनों में आवश्यक हेर-फेर हो। उसके प्रवाह में लोगों को तिनकों की तरह बहने में सुविधा प्रतीत होती है। आँधी के साथ पत्ते उड़ते हैं और तूफानों के साथ धूल के कण आसमान तक जा पहुँचते हैं। युग प्रवाह की गति और दिशा यदि उत्कृष्टता की दिशा में चल पड़े तो जन-जन को अलग से समझने धमकाने की आवश्यकता न पड़ेगी।

संक्षेप में आदर्शवादी वातावरण बनाने के व्यापक प्रयास को युग निर्माण कह सकते हैं। ऋतुंभरा प्रज्ञा प्राप्त संवेदनाओं का क्रियान्वन युग निर्माण से ही होना चाहिए। अस्तु, इसे दूसरा चरण कह सकते हैं। ज्ञान की सार्थकता तभी है जब वह कार्य में परिणत हो। गायत्री परिवार को स्थापना और युग निर्माण परिवार को प्रक्रिया कहा जाए तो दोनों का मध्यवर्ती तालमेल सहज ही समझ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में आ सकता है और किसी भ्रम में पड़ने की अपेक्षा दोनों को प्रगति क्रम पर बढ़ते दो चरणों का सम्मिलित उपक्रम समझा जा सकता है।

ऋतुंभरा प्रज्ञा और सत्प्रवृत्ति संवर्धन का समन्वित स्वरूप क्या बन सकता है उसके लिए नए सिरे से खोजबीन करने की आवश्यकता नहीं। पुराना राजमार्ग ही सुधार सँभाल लिया जाए तो पगडंडी खोजने और जंजाल में भटकने की आवश्कयता न पड़ेगी। धर्मतंत्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया चिर परीक्षित है। दूरदर्शियों ने मानव जीवन और समाज संगठन के हर पक्ष को ध्यान में रखते हुए इस राजमार्ग का निर्धारण किया है। इसमें श्रद्धा और प्रखरता के लिए समान रूप से स्थान है। आज का पर्यवेक्षण करना व्यर्थ है। इन दिनों विकृतियों ने अकेले धर्म पर ही आक्रमण नहीं किया है लोक व्यवहार के हर क्षेत्र पर भी उनका आधिपत्य है। धर्म क्षेत्र में घुसी हुई विकृतियों के आधार पर ही यदि उसे बहिष्कृत किया जाता है, तो फिर अकेला धर्म ही नहीं मरेगा। शासन, समाज, व्यवहार, विनोद, उद्योग, दर्शन आदि के सभी क्षेत्रों की स्थिति को अवांछनीय घोषित करना पड़ेगा।

बात परिवार शब्द की व्याख्या को लेकर आरंभ हुई और नव सृजन की कार्यपद्धति तक आ पहुँची। इतने पर भी तारतम्य वही बना हुआ है कि पारिवारिकता ही गौरवशाली अतीत रही है और उसी पर उज्ज्वल भविष्य की आशाएँ केंद्रित हैं। सतयुग में मनुष्यों की आकांक्षाएँ और गतिविधियाँ आत्मीयता की भावना और पारिवारिकता की रीति-नीति पर आधारित थीं। देव-मानवों का समुदाय इन दिनों किस प्रकार धरती पर स्वर्ग जैसी परिस्थितियाँ बना सका इसका पुन: परीक्षण करना हो तो एक बार उन्हीं आस्थाओं और प्रथाओं को अपना कर यह अनुभव किया जा सकता है कि अभावों और समस्याओं का हल किस प्रकार जादुई चमत्कार के साथ होता है और वर्तमान साधनों के सदुपयोग भर से किस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति और समृद्धि की—प्रसन्नता और आशा की परिस्थितियाँ अनायास ही बनती चली जाती हैं।

पारिवारिकता भौतिक भी है और आध्यात्मिक भी। भौतिक इस अर्थ में कि उसकी उत्कृष्टता को स्वर्ग में और निकृष्टता को नर्क में परिणत होते हुए इन्हीं आँखों से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आध्यात्मिकता इस अर्थ में कि श्रेष्ठता का दर्शन और आदर्शवादी व्यवहार को अभ्यास में उतारने के लिए उससे अन्य और कोई सरल स्वाभाविक कार्यक्षेत्र बन सकने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतएव नव सृजन के लिए आधारभूत तथ्य परिवार संस्था का नव निर्माण नितांत आवश्यक समझा गया और मिशन के संगठन का स्वरूप एवं गतिविधियों का निर्धारण एक ही परिवार शब्द के अंतर्गत कर दिया गया। अब उसी घोषणा को अधिक तत्परता के साथ क्रियान्वित करना है। इसी कर्तृत्व के लिए जितनी शक्ति और सामर्थ्य अर्जित करनी थी अब इतने समय में वह भली प्रकार जुट भी गई है।

पारिवारिकता एक आदर्श है जिसे गृही-विरागी सभी समान रूप से अपने चिंतन और व्यवहार में भली प्रकार उतार सकते हैं। उसमें विवाहित या अविवाहित होने—संतान पैदा करने न करने का कोई सीधा संबंध नहीं है। यह अपनी इच्छा या सुविधा की बात है। उसमें पारिवारिकता का आदर्शवादिता के साथ सीधा संबंध तनिक भी नहीं है। यह तथ्य इसलिए उजागर किया गया है कि परिवार अभियान का अर्थ कोई विवाह और प्रजनन के साथ न जोड़ने लगे और पशु प्रवृत्तियों को आदर्शवादिता का प्रतीत ठहराकर उसे आवश्यक सिद्ध न करने लगे।

विवाह गठन और प्रजनन एक सृष्टि कर्म है उसे न निरुत्साहित करने की आवश्यकता है न प्रोत्साहित करने की। यह प्राणी स्वभाव का सहज प्रवाह अनादि काल से चलता आ रहा है और अनंत काल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक चलता रहेगा। परिवार बसे हुए हैं और बसे ही रहेंगे। उसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता उन्हें नहीं है जो युग सृजन का, प्रज्ञावतरण का महान उद्देश्य लेकर चले हैं। उन्हें तो इतना ही सोचना और करना है कि पारिवारिकता की उदार सद्भावना का अधिकाधिक विकास कैसे हो। कुटुंब तो असंख्य हैं पर पारिवारिक सद्भावना का जिनमें दर्शन हो सके वे कठिनाई से थोड़े से ही ढूँढ़े जा सकेंगे। शेष तो सराय, जेलखाने, भेड़वाड़े की तरह खाने-सोने के आश्रय भर बनकर रह जाते हैं। काम-कौतुक, शिशु वात्सल्य और निर्वाह व्यवस्था के सूत्र ही किसी प्रकार कुटुंबों को साथ रहने की विवशता में जकड़े रहते हैं, अन्यथा वे निरंतर चलने वाली आपाधापी से टकराकर विखरते जुड़ते और अराजकता का वातावरण उत्पन्न करते।

परिवार निर्माण का एक कार्यक्रम कुटुंबों में पारिवारिकता की सदाशयता का प्रवेश कराना और घर-घर में स्वर्ग का उल्लास अवतरित कर के दिखाना भी है। इसके लिए यह अपेक्षा की गई है कि परिवारों के प्रभावशाली सदस्य आगे बढ़ें और अपने-अपने कुटुंब में उत्कृष्ट चिंतन तथा श्रेष्ठ आचरण के लिए वातावरण बनाएँ। अपने शरीर को आप सँभालना पड़ता है। शौच, स्नान, भोजन, शयन आदि कृत्य स्वयं ही करने होते हैं। दूसरे तो एक सीमा तक सहायता कर सकते हैं। ठीक इसी प्रकार जो परिवार का उत्तरदायित्व स्वीकार करने की स्थिति में हैं उन सदस्यों को आगे बढ़ना चाहिए और अन्य दूरदर्शियों के साथ योजनाबद्ध रूप में—धैर्यपूर्वक इस दिशा में आगे कदम बढ़ाना चाहिए। यह कार्य धैर्यपूर्वक करने का है। उतावली में हानि होगी। आदतें देर से बनती हैं और देर से ही छूटती हैं। हर मनुष्य का अपने आपके प्रति असाधारण पक्षपात होता है। न अपने दृष्टिकोण में, न स्वभाव में, न क्रिया-कलाप में कोई दोष दीखता है। अपनी पीठ किसी को नहीं दीखती। इसी प्रकार अपने व्यक्तित्व की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृष्ठभूमि समझना भी सर्व साधारण के लिए अति कठिन होता है। न तो कोई आत्म समीक्षा करता है और न अपने दोष-दुर्गुणों को स्वीकार करता है। बताने पर अपना अपमान सोचता है और उस कथन को विद्वेषपूर्ण ठहराता है। प्रचलित ढर्रा बदलने के लिए—सुधार, परिवर्तन करने के लिए सहमत करने में निश्चित रूप से असामान्य कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अपने घनिष्ठ तक इसकी उपेक्षा करते, असहमत रहते और कई बार तो विरोध करते देखे गए हैं। आमतौर से ऐसे प्रयासों का उपहास होता है। व्यंग चलते हैं। प्रयत्न कर्ताओं को सनकी ठहराया जाता है। सामने सहमत, पीछे असहमत की आँख-मिचौनी चलती है। बाहर का सुधार सरल है, घर का कठिन। वस्तुओं की उलट-पलट करने में कुछ तो अड़चन पड़ती ही है पर व्यक्तियों का स्वभाव, अभ्यास एवं ढर्रा बदलना और भी कठिन है। ऐसी दशा में सफलता उन्हें ही मिलेगी जो धैर्यपूर्वक, संकल्पपूर्वक, साहसपूर्वक इस प्रयास में सदा-सर्वदा रहने का निश्चय करेंगे। अवज्ञा होने पर उत्तेजित हो उठने और कलह खड़ा करने या खीझ कर हाथ खींच लेने वाले उतावले लोग इस कार्य में हाथ न डालें तो अच्छा है। सफलता तो मिलेगी नहीं उलटे मनोमालिन्य का वातावरण बन जाएगा।

बच्चे को प्रौढ़ बनने में देर लगती है। कुसंस्कारिता बचकानापन है। बच्चे अनगढ़ भी होते हैं और कुसंस्कारी भी। उनको समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने में धैर्यपूर्वक प्रयत्नरत रहना पड़ता है। अनगढ़ परिवार को एक छोटा बच्चा मानकर चलना चाहिए और परिपक्व-परिपुष्ट बनाने के लिए दूरगामी योजना बनानी चाहिए। गिरना सुगम है, उठना कठिन। विग्रह उत्पन्न करने और बुरी आदतें सिखाने तथा कुमार्ग पर धकेलने में हर कोई सफल हो सकता है, किंतु शालीनता को गले उतारना और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे स्वभाव का अंग बनाने जैसी परिपक्व स्थिति तक पहुँचाना—वटवृक्ष लगाने और उसे प्रौढ़ परिपक्व बनाने जितना कठिन है। यह एक उच्चस्तरीय साधना है। सृजन महान है। परिवार में सदस्य भले ही थोड़े हों या छोटे, पर उनमें सुसंस्कारिता उत्पन्न करना और परिपक्व बनाना उतना ही कठिन है जितना अनगढ़ पत्थर को सुगढ़ देव प्रतिमा में बदल देना। व्यक्ति गढ़ने का शिल्प संसार में सबसे बड़ा कला-कौशल है। एक व्यक्ति गढ़कर भी कोई शिल्पी धन्य हो सकता है फिर पूरे परिवार को बनाने का प्रयत्न करना और उसमें आंशिक सफलता प्राप्त कर लेना भी सामान्य बात नहीं है। कार्य की गरिमा और जटिलता को समझते हुए जो धैर्यपूर्वक उस प्रयास में जुटे सकें उन्हें सच्चे अर्थों में कलाकार कहा जाएगा। ऐसे कलाकार, जिन्हें स्वयं को इस तप साधना में तपाने और गलाने के लिए व्रतशील तपस्वी की तरह तत्पर होना पड़ता है।

परिवार निर्माण का प्रयास देखने भर में छोटा लगता है किंतु उसका महत्त्व असाधारण है। प्रत्येक परिवार में सुसंस्कारिता का वातावरण उत्पन्न किया जाए और हर घर में नवरत्न पैदा होने लगें तो परिवारों से बने हुए समाज का वातावरण बदलने में, समाज का कायाकल्प होने में कोई बड़ी बाधा नहीं आ सकती। समाज आखिर है क्या? उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व तो है नहीं। वह आखिर है तो परिवारों का ही समुदाय। उसी के अभिनव निर्माण की आवश्यकता है। व्यापक अर्थों में समाज को विश्व मानव भी कहा जा सकता है। अभिनव कायाकल्प पूरे विश्व मानव समाज का ही करना है। परिवार निर्माण को उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रारंभिक चरण कहा जा सकता है। परिवार निर्माण प्रारंभिक चरण होते हुए भी और उसका प्रयोजन सीमित होने से उसका महत्त्व कम नहीं हो सकता। कदम छोटे ही उठाए जाते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर छोटे-छोटे कदमों से ही लंबी दूरियाँ तय होती हैं। परिवार निर्माण अपना छोटा-सा चरण है और समाज का निर्माण उसका व्यापक लक्ष्य है।

सीमित प्रयोजन और आरंभिक प्रयास के रूप में चलाए गए परिवार निर्माण का बड़ा और व्यापक उद्देश्य व्यक्ति के दृष्टिकोण और आचरण में उन सद्भावनाओं का समावेश है, जिनसे कौटुम्बिक आत्मीयता और उदार सहकारिता का पग-पग पर परिचय मिलता रहे। बड़ा उद्देश्य वह है जिसमें समाज की पूरी संरचना ऐसी हो जिसमें समस्त मनुष्य समुदाय परस्पर कुटुंबियों जैसा सद्भाव संपन्न व्यवहार करे। दु:ख को बँटाने और सुख को बाँटने की सामूहिक प्रगति एवं प्रतिष्ठा को निजी सफलता मानने की प्रवृत्ति पारिवारिकता की कसौटी है।

देश, धर्म, जाति, भाषा आदि की संकीर्णताओं तथा धन, वैभव, पद, आधिपत्य, अहंकार आदि की उच्छृंखलताओं से जो अनाचार सर्वत्र फैला हुआ है उसका निराकरण पारिवारिकता का विस्तार और कार्यक्रमों के साथ जुड़ा है, जो चिंतन तथा चरित्र को प्रवाहित कर सके—सहकारिता एवं सद्भावनाओं का प्रचलन एवं प्रवाह उत्पन्न कर सके।

परिवार-निर्माण कुटुंब सुधार से हो सकता है, किंतु उसका विस्तार तो तभी होगा जब उसे सद्भाव संपन्न सहकारिता के रूप में हर क्षेत्र में क्रियान्वित, विस्तृत एवं परिपुष्ट होता देखा जा सके।

युग निर्माण मिशन सच्चे अर्थों में पारिवारिकता का परिचय दे सकने योग्य व्यक्तियों का समुदाय गठित करने के लिए विर्निमित हुआ है। परिजनों का पारस्परिक व्यवहार इसी आधार पर विकसित होना चाहिए। उनकी सेवा-साधना में अपने तथा दूसरों के कुटुंबों में परिवारिकता का समावेश करने के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाव भरे क्रियाकलापों का प्रचलन प्रकट परिलक्षित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त नव-सृजन का लक्ष्य पूरा करने के लिए समस्त उन सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन होना चाहिए जो धर्मतंत्र से लोक-शिक्षण और लोक-निर्माण का कार्यक्रम अपना कर सदाशयता का वातावरण बनाने में जुटी हुई हैं। परिवार निर्माण अभियान को अब अधिक जागरूकता और तत्परता के साथ इसी दिशा में अग्रसर होना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार निर्माण और महिला जागरण

परिवार निर्माण युग की पुकार है और इसे अपना सौभाग्य ही समझना चाहिए कि युग निर्माण परिवार के सृजन शिल्पियों को महिला जागरण का जागृत महिलाओं के माध्यम से परिवार निर्माण का अभिनव शुभारंभ करना पड़ रहा है। महिलाओं को परिवार की धुरी, इसका प्राण, आत्मा कहा जा सकता है। इसलिए महिला जागृति को परिवार निर्माण का ही पर्याय कहा जा सकता है।

परिवार निर्माण अभियान का यह शुभारंभ लगभग वैसा ही है जैसा गीताकार ने अर्जुन से कहा था 'महाभारत विजय की भूमिका तो पहले ही बन चुकी, कौरव मर चुके, तुझे तो जहाँ रहे वहाँ श्रेयमात्र लेना है।' नवयुग का सृजन, संतुलन बनाने के लिए प्रज्ञावतार की प्रेरणाएँ और प्रवृत्तियाँ निखिल विश्व को प्रभावित कर रही हैं। परिवर्तन अवश्यम्भावी है। तमिस्रा का अंत आया, प्रभात का अरुणोदय सन्निकट है। मूर्छना जगेगी तो अस्त-व्यस्तता भी हटेगी ही। उदीयमान आलोक की ऊर्जा कण-कण को अनुप्राणित करती है। अरुणोदय की—पूर्व की उषा का उल्लास जागरूकों को सर्वप्रथम प्रभावित करता है। ब्रह्म मुहूर्त में उन्हीं की हलचलें सर्वप्रथम दिखाई देती हैं। इन दिनों भी ठीक यही हो रहा है। युग परिवर्तन की हलचलों में अग्रणी बनने वाले श्रेयाधिकारी बन रहे हैं। कुक्कुट बाँग न लगाता तो प्रभात तो होता ही—ऊषा ने अभिनंदन न किया होता तो भी सूर्य तो निकलता ही। अपनी जागरूकता का परिचय देकर श्रेयाधिकारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनने वाले कुक्कुट एवं ऊषा की तरह जागृत आत्माएँ भी अग्रिम भूमिका निभाने का श्रेय प्राप्त कर रही हैं। इसे सौभाग्य भरा संयोग सुअवसर ही कहा जा सकता है।

युग सृजन का ढाँचा खड़ा हो चुका अब उसमें प्राण भरना है। युग सृजन की भूमिका अब इतनी बन चुकी है कि उससे परिवार निर्माण की प्रगति का महत्त्वपूर्ण और अति व्यापक प्रयास उचित रीति से संपन्न हो सके। जागृत महिला इसका नेतृत्व सँभाल लेंगी। समर्थ नर उसका भाव-भरा सहयोग करेगा और साधन जुटायेगा। यही वातावरण इन दिनों बनता और बढ़ता चला जा रहा है।

जागरूकों ने उपेक्षित परिवारों को समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने के प्रयास व्यक्तिगत रूप से आरंभ किए हैं। उसी में परिवार बसाने और उसके सदस्य रहने की सार्थकता भी है। सराय में खाने-सोने के उपरांत उसमें कूड़ा-करकट बखेर कर चले जाने वालों का ही बाहुल्य रहता है। सराहना उनकी है जो जहाँ रहे वहाँ अपनी प्रतिभा का प्रमाण छोड़कर जाएँ। परिवारों से लाभ उठाना सभी जानते हैं। प्रकृति की वंश वृद्धि प्रेरणा कामुकता के रूप में उभरती है। युग्म बनते और प्रजनन करते हैं, यह प्रवाह है जिसे विवशता भी कहा जा सकता है। परिवारों का आरंभ भले ही इस विवशता के कारण होता है पर उनकी मानवोचित गरिमा तभी है जब उनमें शालीनता संवर्धन का उपक्रम चले। यही है पारिवारिक उत्तरदायित्व जिसे निभाने वाले सच्चे अर्थों में परिवारी कहे जा सकते हैं। अन्यथा प्रजनन का समीकरण बनाने में तो चींटी, दीमक और टिड्डी, मक्खी जैसे प्राणी अधिक सफल रहते हैं। मनुष्य की गरिमा इसी में है कि उसमें समुच्चय की शालीनता भरे। सृजन की सत्प्रवृत्ति को कितने ही लोग कितने प्रकार से चरितार्थ करते और अपना कौशल दिखाते पाए जाते हैं। इस संदर्भ में छोटी किंतु महान कलाकारिता इसमें है कि परिवार को सुरुचिपूर्ण, सुव्यवस्थित,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाकर दिखाया जाए। जो इतना भी न कर सकें, अन्यत्र अपनी विशिष्टता का विज्ञापन करते फिरें—उनने कितना ही सम्मान क्यों न बटोरा हो, पर इस दृष्टि से असफल ही कहा जाएगा कि प्रथम कर्तव्य परिवार की उपेक्षा करके अगली छलांग लगाते और ऊँची कूद कूदते रहे, जबकि प्रयास उन्हें पैरों की भूमि के नीचे से आरंभ करना था।

परिवार निर्माण सहज कार्य है इसके लिए दूसरे कर्तव्यों को रोकने की आवश्यकता नहीं पड़ती। शरीर के नित्य कर्म सहज स्वाभाविक हैं उनके करने के लिए कोई अतिरिक्त अवकाश लेने, योजना बनाने, साधन जुटाने या अन्य काम रोकने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सामान्य ढर्रा बना देने और सामान्य साधन जुटा देने भर से नित्य कर्म सामान्य रूप से होते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार का परिवार का सुनियोजित भी है। इसमें अस्त-व्यस्तता उत्पन्न होने का एक ही कारण है महत्त्व की अवज्ञा और कर्तव्य की उपेक्षा। यदि इन दो को हटाया जा सके तो परिवार बसाने वाले उन्हें बनाने के लिए भी वैसा ही प्रयास करेंगे और सफल होंगे जैसे कि शरीरचर्या की आवश्यकता पूरी करने में नित्य ही सफल होते हैं।

परिजनों के प्रति मोह प्रकृतिजन्य है। विकसित प्राणियों के नर-मादा प्रजनन ही नहीं करते, संतान का नियत अवधि तक भरण-पोषण भी करते हैं। यदि मनुष्य भी इतना ही कर सके तो उसे प्राणि जगत के प्रकृति नियमों तक ही सीमाबद्ध कहा जाएगा। आमतौर से मनुष्य भी परिवार बसाते, बढ़ाते, उनके भरण-पोषण का साधन जुटाने में संलग्न रहते हैं। कुछ उत्साही अपने वंशधरों को सुसंपन्न बनाने के लिए सुविधा-साधन जुटाने में अधिक सफलता प्राप्त कर लेते हैं। मनुष्य अन्य प्राणियों से उत्कृष्ट है, इसलिए उसे कुछ ऐसा करना चाहिए कि उनके परिवार में उत्कृष्टता भरी विशेषता दृष्टिगोचर हो सके। जो ऐसा नहीं कर पाते, परिजनों के लिए निर्वाह और वैभव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही जुटाते रहते हैं, उन्हें मोहग्रस्त कहा जाता है। पारिवारिक मोह और कर्तव्य में इतना ही अंतर है कि मोह ग्रस्तों को सुविधा-साधन जुटाने भर की चिंता रहती है। जबकि कर्तव्यपरायण इस परिधि में पलने वाले सभी परिजनों का स्तर ऊँचा उठाने और व्यक्तित्व उभारने का प्रयत्न करते हैं। भले ही इस प्रयास में उस परिवार को कठिन परिश्रम करने, अभावग्रस्त रहने या संपन्नों के बीच उपाहासास्पद रहने जैसी कठिनाइयों का ही सामना क्यों न करना पड़ता रहे। मोह की भर्त्सना इसी अर्थ में की जाती है कि लगाव पक्षपात और उपहार ही मस्तिष्क पर छाया रहे, व्यक्तित्व विकास दृष्टि से ओझल रहे तो वह असंतुलन हर दृष्टि से हानिकारक सिद्ध होगा।

जो जहाँ रहता है वहाँ की स्वच्छता और सज्जा पर भी ध्यान रखता है। न रखे तो उसे गंदा और असभ्य कहा जाता है। शरीर का, बच्चों का, उपकरणों का, निवास गृह का आमतौर से ध्यान रखा जाता है कि वे सुघढ़, स्वच्छ, सुसज्जित दीखते रहें। पर न जाने क्यों परिवार के सदस्यों की ओर से उपेक्षा बरती जाती है। उनके भरण-पोषण भर से कर्तव्य की इति श्री मान ली जाती है, जबकि इसके अतिरिक्त उन्हें सुसंस्कृत बनाना भी उसी उत्तरदायित्व में सम्मिलित रहना चाहिए था। परिजनों को सुविधा जुटाते रहने तक सीमाबद्ध लोग प्राय: सुसंस्कारिता का महत्त्व नहीं समझते और इसके लिए प्रयत्न भी नहीं करते। फलत: जिन्हें जितनी सुविधा मिली है वे उसी अनुपात से कुसंस्कारी बनते जाते हैं। परिणाम उन सभी के लिए दु:खद होता है जो साथ-साथ रहते और गुजर करते हैं।

जन साधारण को इस बेला में हर जागरूक से यह प्रेरणा मिल रही है कि वह जीवन के हर क्षेत्र में सुव्यवस्था एवं शालीनता का समावेश करे। इस दृष्टि से शरीर के उपरांत दूसरा कार्य क्षेत्र परिवार का ही आता है। परिवार निर्माण के प्रयत्नों में आत्म निर्माण स्वत: होता है, खिलौने ढालने के लिए साँचे को तो सही होना ही होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो परिवार को ठीक करेगा उसे पहले अपने को उदाहरण बनना पड़ेगा।

यह व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों की चर्चा हुई। इसके लिए जिन लोगों के बीच रहना पड़ रहा है। उनको सुयोग्य बनाने की वह जिम्मेदारी सामने आती है, जो पिछले दिनों एक प्रकार से विस्मृत ही बनी रही है। इसके लिए कुछ करना ही चाहिए। वह सामान्य न होकर असामान्य होना चाहिए ताकि पिछली उपेक्षा की क्षतिपूर्ति संभव हो सके। अपराधों की गणना में मात्र दुष्टता ही अकेली नहीं है उत्तरदायित्वों की उपेक्षा की भी गणना उन्हीं में होती है। सैनिकों का उपेक्षा के अपराध में भी कोर्ट मार्शल होता है। परिवार बसा भर लेने और उसे सुयोग्य न बना पाने की पिछली भूल का दंड प्रायश्चित यही है कि दूने-चौगुने उत्साह से खाई को भरा जाए। उपेक्षा की हानि की भराई इसी प्रकार हो सकती है कि उस प्रयास में अधिक उत्साह दिखाया जाए।

सृजन शिल्पियों के कंधों पर दुहरा उत्तरदायित्व है। वे मात्र अपने और अपने परिवार तक सीमित नहीं रह सकते उन्हें समाज निर्माण का विश्व निर्माण का—युग निर्माण का उत्तरदायित्व भी बहन करना है। अस्तु, जहाँ अपने निज के घर-परिवारों में अस्त-व्यस्तता और अव्यवस्था का अन्त करना है वहाँ उसी उत्साह से दूसरा कदम यह भी उठाना है कि अपने समय की समस्याओं को सुलझाने और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किए जाने वाले सामूहिक प्रयत्नों में भी आगे बढ़कर हिस्सा लिया जाए।

इस तथ्य से सभी अवगत हैं कि मनुष्य एकाकी नहीं समूह शृंखला में आबद्ध है उसका अस्तित्व एक सामूहिक इकाई बनकर इन दिनों रह रहा है। अपना काम बना लेने और अन्यान्यों की ओर से उपेक्षा बरतने को 'संकीर्ण स्वार्थपरता कहकर निन्दित किया जाता है, इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण एक ही है कि व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का समुचित निर्वाह करने पर उन मानवी कर्तव्यों का अंत नहीं हो जाता जिनके अनुसार देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा करना भी शरीर पोषण और परिवार निर्वाह की ही तरह आवश्यक है। सच तो यह है कि महामानवों को अपने निजी उत्तरदायित्वों की थोड़ी उपेक्षा करके भी सामाजिक उत्तरदायित्वों को प्रधानता देनी पड़ती है। भगवान बुद्ध, हरिश्चंद्र, रामतीर्थ, गुरुगोविंद सिंह आदि अगणित व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिन्होंने युगधर्म को प्राथमिकता दी और परिवार को कठिनाइयों में पड़ा रहने दिया। सुरक्षा सैनिकों को, लोकसेवियों को प्राय: ऐसा ही करना पड़ता है। बड़े परिवारों को प्राथमिकता देकर छोटे परिवारों की कठिनाइयों को सहन करना होता है। महानता का समूचा इतिहास इन्हीं उदाहरणों से भरा पड़ा है।'

युग निर्माण योजना के परिजन सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें परिवार निर्माण की युग पुकार को पूरा करने के लिए अपने घर-परिवार की उपेक्षा नहीं करनी पड़ रही है। दोनों कार्य साथ-साथ भली प्रकार चल रहे हैं। किसी का किसी से अवरोध नहीं, वरन एक दूसरे के पूरक हैं। समाज गत परिवार निर्माण योजना को व्यापक और प्रभावी बनाने के लिए उन सत्प्रवृत्तियों को अपने घर में स्थान देना आवश्यक है।

अपने परिवार की संपन्नता बड़ा लेना एक बात है, सुसंस्कारिता बढ़ाना दूसरी। इसके लिए संपर्क समुदाय को भी सुधारना आवश्यक है। अन्यथा उनकी कुसंस्कारिता छूत की बीमारी की तरह अपनी स्वच्छता का घेरा तोड़कर आक्रमण करेगी और किया-कराया चौपट करके रख देगी। अपने घर के लोगों को प्रभावित, प्रोत्साहित करने का एक तरीका यह भी है कि सीमावर्ती क्षेत्र में सुधार की लहर उत्पन्न की जाए। जिसका अनुकरण करने के लिए अपने लोगों में भी सहज उत्साह उभरे और किए जा रहे सुधार प्रयत्नों को अनायास ही बल मिले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो युग अवतरण में अपनी स्थिति अग्रणी मानते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वे परिवार निर्माण जैसे कार्य में अपने श्रम पुरुषार्थ मनोयोग एवं प्रभाव का पूरा-पूरा उपयोग करें। जिससे वे प्रज्ञावतार के सहचरों की तरह अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। युग साधना इसी प्रकार बन पड़ेगी कि नव निर्माण के महत कार्यों में भाव भरी मनोभूमि लेकर कार्य क्षेत्र में उतरा जाए। परिवार निर्माण इस संदर्भ में एक महान कार्य है। इसमें संलग्न होने वालों के स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही समान रूप से सधते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संगठित प्रयासों के लिए तत्परता बरती जाए

परिवार बसाना और परिवार का निर्माण करना दो भिन्न बातें हैं। परिवार बसाने के लिए किन्हीं विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता नहीं पड़ती। अन्य प्राणियों की तरह मनुष्यों में भी नर और नारी दो इकाइयाँ होती हैं और वे पारस्परिक सहयोग से परिवार बसाती हैं, नई पीढ़ी उत्पन्न करती हैं। नई पीढ़ी उत्पन्न करना, संतान को जन्म देना और इस प्रकार परिवार बसाना एक बात है तथा उसका स्तरीय निर्माण करना उससे अलग भिन्न बात है। बीज बोकर अंकुर उगाने का क्रम बिठाना एक बात है तथा सुरम्य उद्यान खड़े करना दूसरी बात। बीज बखेरने का काम तो कोई अनाड़ी आदमी भी कर सकता है, पर सुव्यवस्थित एवं फलता-फूलता उद्यान बना देना कुशल माली के कौशल पर ही निर्भर करता है। विवाह का एक कदम उठाते ही, दांपत्य जीवन की देहरी में कदम रखने पर प्रजनन का दूसरा कदम चल पड़ता है। इस प्रकार अनायास ही संसार में एक नए परिवार का सूत्रपात होता है। माता-पिता, संतान के साथ अपना अलग परिवार बसाने की आवश्यकता कई कारणों से अनुभव करते हैं। उस आवश्यकता को वे प्रकृति प्रेरणा से ही पूरा कर लेते हैं। इसी प्रकार कुटुंब बनते और बढ़ते चले जाते हैं। बात केवल यहीं तक सीमित होती तो उसके लिए कुछ सोचने या करने की आवश्यकता नहीं थी, किंतु प्रश्न जब परिवार के वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में उत्कृष्टता के समावेश का उठता है तो नए सिरे से विचार करना पड़ता है और परिवार संस्था के स्तरीय निर्माण की दूरगामी योजना बनानी पड़ती है। कार्यक्रम कितना ही अच्छा क्यों न हो, उसकी सफलता उसे क्रियान्वित करने वाले सूत्र संचालकी की क्षमता एवं कुशलता पर ही निर्भर रहती है। परिवार निर्माण का सूत्र संचालन किन्हें करना चाहिए? उत्तर एक ही है नारी को, महिला को। हर दृष्टि से विचार किया जाए तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि वास्तव में परिवार संस्था की सूत्र संचालिका परमेश्वर ने नारी को ही बनाया है। वही पत्नी के रूप में नए परिवार का श्रीगणेश करती है। जननी के रूप में उसका विकास विस्तार करती है। गृहणी के रूप में सुव्यवस्था के सूत्रों को सँभालती है। और यही वह है जो गृहलक्ष्मी के रूप में उस संस्था को नर रत्नों की खदान बना देती है। परंतु प्रत्येक नारी गृहलक्ष्मी के रूप में परिवार को नर रत्नों की खदान नहीं बना पाती। प्रस्तुत प्रयोजन वही नारी पूरा कर सकती है जो सुसंस्कृत, सक्षम और सुविकसित हो। सभी महिलाएँ इस स्तर की कहाँ होती हैं? बल्कि कहा जाना चाहिए कि अधिसंख्य महिलाएँ इस दृष्टि से अक्षम होती हैं। इसलिए परिवार संस्था को सुविकसित बनाने की बात जब सोची जाए तो यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए और अन्य लोगों को उसकी सहायता के लिए तैयार रहना चाहिए।

यह निर्विवाद है कि सुयोग्य गृहणी सुसंस्कृत महिला ही संतान को सुयोग्य और सुसंस्कृत व्यक्तित्व प्रदान करती है। इस तथ्य को हजार बार दोहराया जाना चाहिए कि सुयोग्य माता के आँचल की छाँह में ही संस्कारवान बालक पलते और सुविकसित व्यक्तित्व के स्वामी बनते हैं। जैसे भी हो बच्चों का पालन-पोषण कर बड़ा कर देने की बात, घर के लोगों को खाना बनाकर खिला देने और अन्य आवश्यक सेवाएँ करने की बात अनगढ़ और असंस्कृत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी भी कर सकती है और इतने मात्र में ही अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेने वाली नारी परिवार निर्माण के लिए कुछ भी नहीं कर सकती, उसके लिए सुसंस्कृत महिला ही समर्थ और उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

परिवार निर्माण के लिए नारी नहीं महिला चाहिए। नारी आकृति को प्रकृति ढालती है, किंतु महिला प्रकृति को ढालने के लिए मानवी प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है। जमीन से धातुएँ कच्ची निकलती हैं। प्रयोग में आने योग्य स्तर तक पहुँचाने का शोधन कार्य कारखानों में कुशल इंजीनियरों द्वारा संपन्न होता है। आज की महती आवश्यकता 'महिला' उत्पादन की है। इसके बिना परिवार संस्था में प्रगतिशीलता का समावेश नहीं हो सकता। परिवारों का स्तर यदि गया-बीता ही बना रहा तो नर रत्नों की सुसंस्कृत नागरिकों के उत्पादन की संभावना समाप्त हुई समझी जानी चाहिए। साँचे ही टूटे-फूटे, टेढ़े-तिरछे होंगे तो खिलौने या पुर्जे किस प्रकार सही ढल सकेंगे। इसी प्रकार समाज की समस्याओं का समाधान करने तथा उज्ज्वल भविष्य के निर्धारणों के सफल होने की संभावना भी तब तक मूर्तिमान न हो सकेगी जब तक कि उसके सदस्यों-नागरिकों का स्तर ऊँचा न उठे। समाज का अलग से कोई अस्तित्व नहीं। मनुष्यों के समुदाय का नाम ही समाज है। मनुष्य जन्मते ही नहीं, पलते और ढलते भी परिवार संस्था के माध्यम से ही हैं। इन सभी तथ्यों पर विचार करने से एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि परिवार संस्था का पुनर्निर्माण इतना आवश्यक है कि उसे अन्य समस्त निर्माण प्रयोजनों से प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आज उन्हें जिस दुर्गति में रहना पड़ रहा है उसका अविलम्ब अंत होना चाहिए।

क्या किया जाए? इसका उत्तर एक ही है—नारी को 'महिला' बनाया जाए और उसे 'गृह लक्ष्मी' के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया जाए। इसके लिए सुशिक्षित बनना उतना जरूरी नहीं जितना सुसंस्कृत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होना। सुसंस्कृत होने में शिक्षा से सहायता तो मिलती है पर वह अनिवार्य नहीं है। अशिक्षित या शिक्षित होते हुए भी सुसंस्कृत बना जा सकता है। इसके विपरीत उच्च शिक्षित कहलाने वाले भी चिंतन और चरित्र की दृष्टि से निकृष्ट स्तर के हो सकते हैं। विशेषतया आज की स्कूली शिक्षा पर तो यह बात और भी अधिक लागू होती है। सुशिक्षितों में सुसंस्कारिता का अभाव देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि शिक्षा और संस्कृति मिल तो सकती है पर वस्तुतः वे दोनों एक दूसरे के सर्वथा भिन्न हैं। इसमें से जहाँ एक हो वहाँ दूसरी का होना आवश्यक नहीं।

नारी शिक्षा के लिए चलते रहे प्रयत्नों की सराहना ही की जा सकती है, किंतु इतने से ही वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता जिसे व्यक्ति और समाज के उत्थान-पतन के केंद्र बिंदु परिवार का सुसंचालन करने वाली सुसंस्कृत—महिलाओं का निर्माण संभव हो सके। इसके लिए अलग से प्रयत्न करने होंगे। गुण, कर्म स्वभाव का समन्वय ही व्यक्तित्व है। परिष्कृत व्यक्तित्व ही सुसंस्कृत होते हैं। दृष्टिकोण और स्वभाव में उत्कृष्टता का समावेश ही 'नारी' को 'महिला' के रूप में विकसित करता है। 'महिला' परिवार की कर्णधार है। एकाकी निर्माण तो कुशल इंजीनियर भी नहीं कर सकता। सहायक और साधन तो उसे भी चाहिए। इसी प्रकार 'महिला' अकेली ही परिवार को सुधार दे ऐसा नहीं हो सकता। घर के अन्य लोगों का सहयोग एवं वातावरण बनाने के लिए आवश्यक साधनों की भी आवश्यकता रहेगी ही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपर्क और परामर्श का क्रम भी चले

जितना संभव हो सके उतने क्षेत्र में प्रचार संपर्क कर के लोगों को परिवार निर्माण की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए। लोगों को समझाया जाना चाहिए कि परिवार को पालते तो सभी हैं, उसमें पलते भी सभी हैं पर क्या किसी ने यह सोचा है कि इस छोटे से उद्यान को स्वर्गोपम कैसे बनाया जा सकता है ?

इस दिशा में कभी कोई विचार न उठना अज्ञान या उपेक्षा का ऐसा दुखदाई पक्ष है जिस पर हँसी भी आती है और दु:ख भी होता है। शरीर में प्राण रहता है, उसी के सहारे सुख-दु:ख पाता, नीचे गिरता और ऊँचा उठता है। इतने पर भी कितने लोग हैं जो उसकी समग्र संरचना से लेकर सुरक्षित एवं सक्षम रखने की जानकारी रखते हैं। ड्राइवर या मालिकों को अपनी उसी मोटर के बारे में नगण्य जानकारी हो, जिस पर वह सवार है एवं गुजर करता है तो उसे आश्चर्यजनक अज्ञान ही कहना चाहिए। शरीर का बनना-बिगड़ना प्राय: अपने ही हाथ होता है, फिर भी कोई विरले ही उसके संबंध में सुनिश्चित दिलचस्पी लेते हैं। आए दिन रुग्ण रहते और अकाल मृत्यु के मुख में प्रवेश करते हैं, फिर भी वह अज्ञान का परदा उठता नहीं, जिसे हटाना कठिन नहीं अति सरल है। यदि उतना भर बन पड़ा होता तो मनुष्यों को उतनी अधिक व्याधि न सताती जैसी कि इन दिनों सताती है और अपंग असमर्थ बनाए रहती है।

शरीर के उपरांत दूसरा निर्वाह क्षेत्र है—परिवार। विवाहित-अविवाहित, विधुर-विधवा, बाल-वृद्ध, गृही-विरक्त सभी उसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्वाह करते हैं, उसी में जन्मते-मरते हैं। उसी के आश्रय में पलते और अपनी क्षमता, प्रतिभा एवं संपदा का अधिकांश भाग उसी पर समर्पित करते हुआ परिजनों की चिंता में ही डूबे रहते है। उन्हीं की सुख-संपदा पर सारी लालसाएँ केंद्रित रहती हैं। बड़ी-बड़ी आशाएँ-अपेक्षाएँ उन्हीं से रहती हैं। इतने पर भी आश्चर्य इस बात का है उस परिवार को सुखी-समुन्नत बनाने की कला कदाचित ही किसी को आती हो। अपनी क्षमता का किस प्रकार, क्या नियोजन परिवार के लिए किया जाए जिससे वे प्रियजन सच्चे अर्थों में प्रसन्न समुन्नत बन सकें, इसकी वास्तविक जानकारी नहीं के बराबर ही होती है। परिवारों से जो लाभ उठाया जाता है, वह नगण्य ही होता है। पत्नी ही एकमात्र ऐसी होती है जो स्वेच्छापूर्वक मरती-खपती रहती है। शेष तो विग्रह ही उत्पन्न करते हैं। न करें तो भी उनकी उपस्थिति से जो उल्लास सहज ही मिलता रह सकता था, उससे अधिकांश को वंचित ही रहना पड़ता है। यह कैसी विसंगति है कि इच्छा रहते हुए भी परिजनों के स्नेह-सहयोग की मात्रा इतनी कम मिलती है कि अतृप्ति और शिकायत ही बनी रहती है?

यह सब क्या है? इसके उत्तर में एक ही शब्द कहा जा सकता है—अनगढ़ दृष्टिकोण। नियोजन, अनुशासन, लक्ष्य, क्रिया-कलाप सब कुछ अनगढ़ रहे तो परिणाम भी वैसा ही अनगढ़ रहना चाहिए जैसा कि सामने खड़ा रहता है। वह इमारत जिसका नक्शा, फीते, पैमाने अथवा व्यवस्था का प्रयोग न किया जाए ऐसे ही ईंट-गारे का मनमाना प्रयोग हो रहा हो तो उसकी सूरत और उपयोगिता कैसे होगी? लागत और मेहनत का कितना फल मिलेगा, सहज अनुमान लगाया जा सकता है। परिवारों की दुर्गति ठीक उसी प्रकार हो रही है। उत्पादन तो भोंड़ा होता ही है, बनाने और चलाने वाले के हिस्से में पड़ौसियों की बदनामी, परिजनों की नाराजगी ही हाथ लगती है। प्राय: सारी जीवन संपदा जिसके लिए निचोड़ दी वह न तो स्वयं ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फला-फूला और न अपने को आनंद न सही संतोष तक न लौटा सका, इस निष्कर्ष को देखकर दुर्भाग्य को कोसने के अतिरिक्त और कुछ बनता ही नहीं।

क्या स्थिति को यथावत चलने दिया जाए? नहीं, इससे हर दृष्टि से हानि ही हानि है। संयोजकों के श्रम की निरर्थकता आश्रय पाने वालों की दुर्गति जन्य दुर्मति, पड़ौसियों के व्यंग उपहास, समाज में अस्त-व्यस्तता फैलाने वाली एक नई स्वनिर्मित बुराई, यही निष्कर्ष हैं जो परिवार निर्माताओं और परिपालकों के हिस्से में आते हैं। इतना घाटा मनुष्य को और किसी व्यवसाय में नहीं उठाना पड़ता, जितना परिवार के निर्माण और संचालन में, संभवत: मध्यकालीन लोग इसी कारण परिवार बसाने में डरते होंगे। अथवा कटु अनुभव सामने आते ही उसे छोड़कर भाग खड़े होते होंगे। यों ब्रह्मचारी और वानप्रस्थों की प्राचीन बहुलता उद्देश्य विशेष के लिए होती थी, पर कितनों को ही दुष्परिणामों के देखते हुए भी परिवार प्रवेश में भय लगता होगा। अभी भी नफा-नुकसान का हिसाब लगाने वाली महिलाएँ विवाह करने में घाटा ही घाटा देखती हैं और स्वेच्छापूर्वक अविवाहित जीवन पसंद करती हैं। परिवार का उत्तरदायित्व उन्हें डरावना लगता है।

आज भी स्थिति यही है। बाल बुद्धि तो अनगढ़ खिलौने से भी दिल बहलाती रहती है। ऐसे तो कोई मोहग्रस्त भी जैसे कुछ अपने हैं उन्हीं के बीच मोद मनाता और समय गुजारता रहता है। अभ्यस्त ढर्रे में समय काटते रहने की आदत देकर भगवान ने मनुष्य की असंख्य मुसीबतों से बचा लिया है। यदि ऐसा न होता और वस्तुस्थिति का निरीक्षण करने और निष्कर्ष पर पहुँचने की आदत बनी रहती तो अधिकांश मनुष्यों को हर घड़ी असंतुष्ट और उद्विग्न रहना पड़ता। पर विवेक तो विवेक ही है। समझदारी कभी उठे ही नहीं ऐसा भी तो नहीं होता। जब कभी पर्यवेक्षण का समय आता है तो परिवार पर किए गए श्रम की निरर्थकता ही नहीं प्रतिकूल परिणति भी देख कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारी खिन्नता होती है, जवानी में तो कई प्रकार के नशे चढ़े रहते हैं पर बुढ़ापे में जब पर्यवेक्षण का अवसर आता है तो निराशा और खिन्नता ही हाथ लगती है। आमतौर से जरा जीर्ण व्यक्ति इसी कारण कुड़कुड़ाते और गिड़गिड़ाते रहते हैं।

स्थिति को पलटा जाना चाहिए। परिवार अपने आप में बड़ी शानदार और उपयोगी संस्था है। उसे कोसने की नहीं, सुदृढ़ सुव्यवस्थित बनाने की आवश्यकता है। यदि उद्देश्यों को सामने रखकर उसका गठन किया जाए और सुविधा-साधन जुटाने की तरह सुसंकारिता का वातावरण बनाने का प्रयत्न किया जाए तो कुछ अपवादों को छोड़कर उसका परिणाम श्रेयस्कर होगा। सुनियोजित व्यवसायों में जब सर्वत्र सफलता ही मिलती है तो कोई कारण नहीं है कि आनंद के स्रोत और उल्लास के उद्गम कहे जाने वाले परिवार अपने आप में सुविकसित न कहे जा सकें और राष्ट्रीय प्रगति में असाधारण योगदान दे सकें। आवश्यकता ढर्रा बदलने भर की है। उन्हें नियोजित और अनुशासित किया जा सके तो स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाया जा सकता है। परिवार में रहकर किसी को घाटे में नहीं रहना पड़ता। परिवार भार नहीं होना चाहिए। वरन उसे सँभालने वाले को कुशल माली की तरह अपने उद्यान में छाया, शोभा, सुगंध, आहार, आजीविका और प्रतिष्ठा का परिपूर्ण लाभ मिलना चाहिए, यदि ऐसा न होता तो देवाधिदेव शंकर भगवान परिवार के साथ रहने का झंझट क्यों उठाते ?

नियोजन शीलता का अभाव ही है—जो इस छोटे से दायरे में बसे हुए किंतु परिपूर्ण साम्राज्य में अराजकता की स्थिति उत्पन्न करता है। दूर इस अनगढ़ता को ही किया जाना चाहिए। सामने प्रस्तुत सार्थकता के अति सुंदर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। आत्म विकास का यह सहज सुलभ तरीका है। मेंहदी पीसने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के हाथ अपने आप रँग जाते हैं। परिवार निर्माण की योजना बनाने वाले, स्वजनों का हितसाधन करते हैं। इस प्रयास में अपने गुण, कर्म, स्वभाव का, व्यक्तित्व का स्तर असाधारण रूप से ऊँचा उठा लेते हैं। अच्छे सृजन पर हर कोई गर्व करता है, जिसने अपने परिवार को संपन्नता की दृष्टि से नहीं, सुसंस्कारिता की दृष्टि से समुन्नत बनाया उसे अपने कौशल और कर्तव्य पर गर्व-गौरव अनुभव करने का पूरा अधिकार है। परिजन भी कृतज्ञ रहेंगे, उनके अनुग्रह को जन्म-जन्मांतर तक स्मरण रखेंगे, साथ ही प्रशंसा और प्रतिष्ठा की भी कमी न रहेगी। इन समस्त लाभों से वंचित रहने का एक ही कारण है, इस छोटी किंतु महान संस्था का उद्देश्य पूर्ण दृष्टिकोण में सुव्यवस्थित नियोजन न किया जाना। यदि इस भूल को सुधारा जा सके तो जन-जन के जीवन में अभिनव आनंद का संचार हो सकता है। दरिद्रता के रहते हुए भी यह परिवर्तन बिना किसी कठिनाई के संभव है।

सुधार परिवर्तन के लिए, इन दिनों अनेकों क्षेत्र खुले पड़े हैं, इन सबसे सीधा अपने को, अपने प्रियजनों को, प्रभावित करने वाला कार्य क्षेत्र है—परिवार नियोजन। सरकार, जनसंख्या नियंत्रण को परिवार नियोजन कहती है। वह अपने स्थान पर सही है। अपना उद्देश्य इससे आगे का होना चाहिए। परिवार संस्था किसी उद्देश्य के लिए बसे, किसी विधान के अनुसार चले और किसी निश्चित विधि-व्यवस्था को अपना कर सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में बढ़े। इसके लिए उस संस्था का हर सदस्य अपना कर्तव्य और दायित्व इसी प्रकार निभाए जैसा कि घड़ी में लगे हुए हर पुर्जे को अपने नियत निर्धारण को पूरा करने में संलग्न देखा जाता है। कोई घड़ी अनगढ़ पुर्जों की अराजकता के रहते अपना कार्य कर ही नहीं सकती। इसी की साज-सँभाल की जानी चाहिए। अन्यथा घड़ी जगह घेरेगी, भ्रम उत्पन्न करेगी, और उपहास का कारण बनेगी। मोटर है, तो उसे सही भी होना चाहिए, अन्यथा उसे सिरदर्द ही कहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगा। मरम्मत जब हर टूट-फूट की हो सकती है तो अनगढ़ परिवार को सुदृढ़ बनाने में क्यों सफलता नही मिल सकती ?

इन तथ्यों से जन-जन को अवगत कराया जाना चाहिए, उपेक्षा प्रस्तुत अनगढ़ स्थिति का एकमात्र कारण है। ध्यान न देने पर तो कोठे में भरा हुआ अनाज घुन जाता है, और हरा-भरा खेत सूखता है। साधनों का उपलब्ध भर होना सौभाग्य नहीं है, उनके सदुपयोग का कौशल भी आना चाहिए। अपने कहलाने वाले लोग कितने हैं ? इनकी संख्या गिनने से काम नहीं चलेगा, ध्यान उनके स्तर पर दिया जाना चाहिए। अपनों की स्वस्थता, शिक्षा, चतुरता, संपन्नता और सफलता को देखकर भी उथले स्तर की प्रसन्नता अनुभव की जा सकती है। पर उसमें कुछ सार नहीं है। उस वैभव से जब अपना और साथियों का अहित करने का प्रसंग आए दिन सामने खड़ा रहता है तो प्रतीत होता है परिजनों के वैभव पर प्रसन्न होना व्यर्थ है। आवश्यकता उनमें शालीनता बढ़ाने की है, यदि वह नहीं बढ़ सकी तो समझना चाहिए कि प्रगति का ढकोसला सर्वथा खोखला है।

परिवार निर्माण अभियान में साथ देने वाले एवं सहयोग करने वाले हर सृजन शिल्पी का कर्तव्य है कि वह इन तथ्यों से जन-जन को अवगत कराएँ। विवेचना, बुद्धि उत्पन्न करें और इस निष्कर्ष पर पहुँचने में सहायता करें कि परिवार का पुनर्गठन आवश्यक है। इसके लिए नए सिरे से सोचने का अवसर और कदम उठाने का दिशा निर्धारण मिल सके तो निश्चय ही उस अदृश्य सहायता को दैवी वरदान के समतुल्य माना जा सकता है। मित्र-परिचितों को धन बाँटकर उन्हें सुखी बनाना कठिन है। पर यह सरल है कि उनकी उपेक्षा दूर की जाए और नव सृजन की दिशा में बढ़ने का आलोक पहुँचाया एवं उत्साह बढ़ाया जाए। इस प्रयास में यदि आंशिक सफलता भी मिलने लगे तो समझना चाहिए अपने संपर्क क्षेत्र में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उच्चस्तरीय परोपकार करने का सुअवसर मिल गया। प्रशंसा सुनने या कहने को मिली या नहीं यह सोचना व्यर्थ है। पारिवारिकता के आदर्शवादी स्वरूप को समझने एवं क्रियान्वित करने का यदि थोड़ा भी अवसर किसी को मिलता हो तो उसे आत्म संतोष और आत्म गौरव की अनुभूति अपने भीतर से ही होने लगेगी। इसके लिए किसी के मुख से सुनने की भी आवश्यकता न रहेगी।

परिवार निर्माण अभियान में समय देने की आवश्यकता अनुभव की जानी चाहिए, और जागृत आत्माओं की प्रयत्नाशीलता इस दिशा में गतिशील होनी चाहिए। उन्हें समय निकाल कर एकाकी या एक साथी लेकर परिचित लोगों के बीच संपर्क साधने की योजना बनानी और नियमित रूप से चलानी चाहिए। इसके लिए करना यह होगा कि इस प्रसंग को चर्चा का विषय बनाया जाए और विचारों के आदान-प्रदान का सिलसिला आरंभ किया जाए। बात क्रहाँ से आरंभ की जाए ताकि अस्वाभाविक न लगे। इसके लिए सूत्र ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। इन पृष्ठों पर, इस पुस्तक में छपी प्रेरणाएँ ही चर्चा का विषय बनाई जा सकती हैं। यह पुस्तक लेखों का संकलन मात्र नहीं है, वरन परिजनों—का मार्गदर्शन है। यदि बुरा न लगे तो उसे निर्देश भी समझा जा सकता है। आग्रह-अनुग्रह तो प्रत्यक्ष ही है। कह देने या छाप देने भर से बात नहीं बनती। देखा यह जाता है कि उसकी प्रतिक्रिया क्या हुई ? परिजनों में से किसने उसे कितना समझा, कितना सही माना और किस हद तक उसे क्रियान्वित करने का साहस जुटाया। शांतिकुंज के संचालक सूत्र यह जानने की अपेक्षा रखते हैं। यह उत्तर पत्र के रूप में भी, कुछ तो भेजा ही जा सकता है पर उतना भर पर्याप्त नहीं है। यह मर्यादा नहीं है। पारस्परिक विचार मंथन से बहुत से तथ्य उभरते और बहुत से निश्चल बनते हैं। इसके लिए परिजनों के मध्य लंबी चर्चाएँ चलनी और योजनाएँ बननी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांतिकुंज की अपेक्षा यही है, परिजनों के मध्य यह विचार-विनिमय जितना गहरा और जितना लंबा होगा उसी अनुपात से नव सृजन को गति मिलेगी।

प्रतिभाशाली परिजन अग्रगामी बनें और उन सबसे मिलें जो मिशन से संबंद्ध हैं। विचार मंथन अकेले नहीं हो सकता, उसके लिए दूसरा आवश्यक है। जिनसे मिलने जाया जाए उनसे यही कहा जाए कि शांतिकुंज ने परिवार निर्माण अभियान के संबंध में परिजनों की प्रतिक्रिया जाननी चाही है। उसी संदर्भ में मिलने आना हुआ है। प्रारंभिक चर्चा के लिए यह सूत्र भली प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है। समुद्र मंथन में बहुमूल्य रत्न निकले थे, परिजनों के पारस्परिक विचार से वे प्रयास उभरेंगे, जिनके आधार पर व्यक्ति को सुसंस्कृत और समाज को समुन्नत बनाने की भूमिका सही रूप से निखार सकने वाले शालीन परिवारों का अभिनव निर्माण हो सके। उस दिशा में प्रेरणाएँ दी जा रही हैं, दी जाती रहेंगी। यह एक पक्षीय प्रयत्न है। जानना तो यह भी है कि जिनसे कहा जा रहा है, उनने क्या सोचा ? क्या करने का साहस जुटाया। इसी जानकारी को प्राप्त करने के लिए मिशन के पूर्व परिचितों से मिला जा सकता है।

जागृत आत्माएँ दूसरों के भीतर जागृति की अभिनव चेतना उत्पन्न करें। इसके लिए संपर्क साधने की नितांत आवश्यकता है। पुरुष पुरुषों से, और महिला महिलाओं से मिलने जाया करें। जो परिवार निर्माण योजना की आवश्यकता उपयोगिता भलीभाँति समझ चुके, उनसे क्रियान्वयन संबंधी चर्चा करें। जो अभी इस कार्यक्रम से परिचित नहीं हैं उन्हें प्रस्तुत पुस्तक पढ़कर सुनाई जाए, इसके बाद वार्ता आगे बढ़ाई जाए। अशिक्षितों या अल्प शिक्षितों को सुनने से ही लाभ मिलेगा। इसलिए एक क्रम यह भी चलता रह सकता है कि कुछ-कुछ लोगों को इकट्ठा करके, पुस्तकों के जो अंश, जिनके लिए उपयोगी समझे जाएँ, उन्हें पढ़कर सुनाएँ। यह सुनना अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन-मर्जी के अंट-शंट प्रवचनों की अपेक्षा अधिक प्रेरक एवं अधिक हृदयग्राही हो सकता है।

जिनने उपेक्षा दिखाई हो, उन्हें भी छोड़ नहीं देना चाहिए, हो सकता है प्रथम चर्चा के समय महत्त्व उतनी अच्छी तरह न समझा गया हो, संभव है उस समय कोई व्यस्तता या चिंता रही हो। मन:स्थिति अनुकूल न होने के अनेकों कारण हो सकते हैं। जब मन उचटा होता है तो दार्शनिक चर्चाएँ नहीं सुहातीं, जिनने आरंभ में रुखाई दिखाई वह आगे चलकर अत्यधिक रुचि लेने वाला और प्रयासों में अग्रणी भी हो सकता है। इस आशा के आधार पर जन संपर्क रखा जाए। परामर्शों का सिलसिला बनाए रखा जाए। जिनमें उत्साह दिखाई देता है, उनका परिचय विवरण शांतिकुंज भिजवाते रहा जाए। इस संग्रह से संचालकों का उत्साह एवं साहस बढ़ता है। साथ ही परिजनों की मन:स्थिति की जानकारी मिलते रहने से भावी निर्धारण में सुविधा भी हो सकती है। व्यापक संपर्क और प्रेरक परामर्श का क्रम सभी जागृत आत्माओं को अपने क्षेत्र में अविलंब आरंभ कर देना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार में भी परामर्श का क्रम

संपर्क और परामर्श का यह क्रम अपने-अपने परिवार में भी चलाया जाना चाहिए। जिस प्रकार प्रचारकों से, जन-जन से संपर्क साधने और विचार-विनिमय की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार हर विचारशील ग्रह संचालक को अपने परिवार के सदस्यों से व्यक्तिगत संपर्क साधना और विचार विनिमय का क्रम आरंभ करना चाहिए। साधारणतया यह चर्चा उनकी निजी कठिनाइयों एवं आवश्यकताओं को जानने के रूप में आरंभ होनी चाहिए। ताकि दूसरे पक्ष की रुचि बढ़े और मन खोलने का अवसर मिले, पर इस प्रसंग को यहीं समाप्त नही कर देना चाहिए, वरन आगे वहाँ तक बढ़ाना चाहिए जिसमें परिवार निर्माण के लिए कुछ सोचने और कुछ करने का अवसर मिले। पूर्व पृष्ठभूमि बनाने से ही किसी को बदलने सुधारने में सहायता मिल सकती है। सभी सदस्यों से इस प्रकार की कृत्रिम वार्ता का सिलसिला चल पड़े तो अभीष्ट परिवर्तन में कम से कम विरोध का सामना करना पड़ेगा और देर-सबेर में हर सदस्य का न्यूनाधिक सहयोग मिलने लगेगा।

निजी रूप में परिवार के हर सदस्य की कुछ समस्याएँ, आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ होती हैं। उन्हें समझने और उपयुक्त समाधान के लिए प्रयत्न करने चाहिए। हर व्यक्ति में दोष-दुर्गुण होते हैं और किसी न किसी स्तर के कुविचार पनपते हैं। इनका निराकरण होना चाहिए। परिस्थितियों की तरह मनःस्थिति भी जाननी चाहिए और सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उलझनें दूर करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा अचिंत्य चिंतन पनपता है, और घुटन तक सीमित न रहकर कभी-कभी विस्फोट की तरह प्रकट होता है। ऐसी स्थिति न आने पाए इसके लिए पारस्परिक विचार विनिमय की प्रक्रिया भी परिवारों में पनपनी चाहिए। यदा-कदा जब अवसर हो सदस्यों को इकट्ठा करके आवश्यक परामर्श भी देते रहना चाहिए।

घर के किस सदस्य की विचारधारा किस दिशा में मुड़ रही है, और उनके कृत्यों का प्रवाह किस ओर मुड़ रहा है, इसकी जानकारी गृह संचालक को रखनी चाहिए। प्रत्यक्ष पूछ-ताछ से भी बहुत कुछ जानकारी मिल सकती है। संकोच आड़े आता हो तो दूसरों के मारफत भी जाना जा सकता है, जिनसे खुलकर बात-चीत होती हो। सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और दुष्प्रवृत्तियों के पनपने का सिलसिला शुरू होते ही उनकी जड़ काटनी चाहिए। यह कार्य आवेश उत्तेजना में नहीं, शांत चित्त और धैर्यपूर्वक संतुलित मन:स्थिति में किया जाना चाहिए। इन मोड़ों को न बहुत अधिक महत्त्व दिया जाए और न उपेक्षित रखा जाए। सतर्कता बरतने और प्रसन्नता-अप्रसन्नता प्रकट करने से भी काम चल सकता है। गृह संचालकों को सभी सदस्यों के प्रति एक आँख दुलार की दूसरी सुधार की रखनी चाहिए।

परिवार की गोष्ठियाँ समय पर होती रहनी चाहिए। साप्ताहिक अवकाश का दिन इसके लिए अधिक उपयुक्त रहता है। घर की आर्थिक स्थिति, भावी योजना, प्रस्तुत कठिनाइयों, सामयिक आवश्यकताओं, नीति निर्धारण, उलझनों का सुलझाव, वर्तमान सुधार परिवर्तन आदि विषयों पर खुले मन से चर्चा हो। आवश्यक जानकारियों से सभी को अवगत रखा जाए और प्रस्तुत प्रसंगों पर सभी का अभिमत जानने का प्रयत्न किया जाए। इस आदान-प्रदान से हर सदस्य को यह अनुभव होता है कि परिवार के निर्माण में उसका क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तरदायित्व है ? गलतफहमियाँ आरंभ में छोटी होती हैं पर वे आशंकाओं और कुकल्पनाओं के सहारे बढ़ती–बढ़ती आसमान तक जा पहुँचती हैं और ऐसी खाई खड़ी करती हैं, जिनका पटना कठिन हो जाता है। वस्तुस्थिति की जानकारी देना और प्राप्त करना है तो कठिन है, किन्तु जिसके सहारे समय रहते आवश्यक सुधार परिवर्तन संभव हो सकता है। परिवार निर्माण अभियान की सफलता के लिए यह प्रक्रिया हर प्रगतिशील परिवार में अविलम्ब क्रियान्वित होने की आवश्यकता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org